सत्ता की भाषा और जीवन की कीमत

अश्विनी कुमार सुकरात
सहायक प्रोफेसर (एड-हॉक) महर्षि वाल्मीकि कॉलेज ऑफ़ एजुकेशन दिल्ली विश्वविद्यालय

सारांश *Abstract*—भारत जैसे बहुभाषिक देश में अंग्रेज़ी माध्यम (English Medium) शिक्षा प्रणाली ने एक अदृश्य लेकिन घातक श्रेणीकरण उत्पन्न कर दिया है, जहाँ स्थानीय भाषा परिवेश में पले छात्र—विशेषतः ग्रामीण, आर्थिक एवं सामाजिक दलित, आदिवासी, निम्न मध्यमवर्गीय और यहाँ तक की गैर- संभ्रांत (एलीट) नव-धनाढ्य पृष्ठभूमि से आने वाले—उच्च शिक्षा एवं अंग्रेजी माध्यम स्कूली शिक्षा के गलियारों में न सिर्फ़ असफल होते हैं, बल्कि कई बार जीवन से भी हार मान लेते हैं। यह शोध लेख इसी 'इंग्लिश मीडियम सिस्टम' की भाषिक अन्यायपूर्ण संरचना और उसके परिणामस्वरूप होने वाली शैक्षणिक आत्महत्याओं का समाजशास्त्रीय और भाषावैज्ञानिक विश्लेषण प्रस्तुत करता है।

लेख में ऐसे छह आत्महत्या केस—AIIMS, IIT, Anna University जैसे संस्थानों से—तथ्यात्मक रूप से प्रस्तुत किए गए हैं जो इस बात की पुष्टि करते हैं कि भाषिक बहिष्कार और अंग्रेज़ी आधारित अकादमिक संस्कृति छात्रों को कैसे मानसिक संकट और पराजय की ओर धकेलती है। लेख में बौर्डीयू (Bourdieu), स्कुटनैब-कांगस (Skutnabb-Kangas), और फरेरे (Freire) के सैद्धांतिक प्रतिमानों के माध्यम से यह दिखाया गया है कि अंग्रेज़ी को योग्यता का पर्याय मानना, शैक्षणिक न्याय के मूल सिद्धांतों का उल्लंघन करता है।

लेख मातृभाषा आधारित बहुभाषी शिक्षा (Mother-Tongue Based Multilingual Education) को एक वैकल्पिक समाधान के रूप में प्रस्तुत करता है, और यह तर्क देता है कि अंग्रेज़ी को एक कौशल के रूप में स्वीकार किया जाए, लेकिन उसकी संस्था-वर्चस्ववादी भूमिका को तोड़ा जाए। यह शोध, आत्महत्याओं को मात्र मानसिक समस्या नहीं, बल्कि भाषिक और संरचनात्मक हिंसा का परिणाम मानते हुए, एक मानवकेंद्रित नीतिगत हस्तक्षेप की आवश्यकता को रेखांकित करता है।

प्रमुख शब्द *Index Terms*—भाषिक अन्याय (Linguistic Injustice),अंग्रेज़ी वर्चस्व (English Hegemony), शैक्षणिक बहिष्कार (Academic Exclusion), आत्महत्या और शिक्षा (Suicide and Education), मातृभाषा आधारित शिक्षा (Mother-Tongue Based Education), प्रतीकात्मक हिंसा (Symbolic Violence), फरेरे का आलोचनात्मक शिक्षाशास्त्र (Freire's Critical Pedagogy), बौर्डीयू का सांस्कृतिक पूँजी सिद्धांत (Bourdieu's Theory of Cultural Capital)

0.2 घोषणा (Declaration):

यह शोध लेख मूलतः *कुमार, अ. (2014). English Medium System that is Angreji Raj* [स्व-प्रकाशित मोनोग्राफ] पर आधारित है। प्रस्तुत लेख उस पुस्तक में सम्मिलित अनुभवजन्य अध्ययनों, केस स्टडीज़, मीडिया रिपोर्ट्स, अभिभावक–छात्र संवादों और संस्थागत अवलोकनों का भविष्य-विस्तार (future academic celebration) है।

विशेष रूप से, इस लेख में लेखक द्वारा लिखित अध्याय *"इंग्लिश मीडियम शिक्षा और आत्महत्या"*, जो मुख्यतः मीडिया रिपोर्ताज पर आधारित था, को अब एक पूर्ण शोधात्मक प्रारूप में पुनर्परिभाषित किया गया है। यह लेख उस अध्याय की पुनर्रचना नहीं, बल्कि उसका सैद्धांतिक और विधिवत अनुसंधानात्मक विस्तार है — जिसमें मूल खंडों के अतिरिक्त कई नए संरचनात्मक, सैद्धांतिक और अनुभवजन्य आयामों को भी समाहित किया गया है।

I. प्रस्तावना (INTRODUCTION)

1.1 पृष्ठभूमि: भाषाई पहचान बनाम शैक्षिक अवसर

भारत एक बहुभाषी देश है—भाषाओं की विविधता, क्षेत्रीयता और सांस्कृतिक गहराई इसकी ऐतिहासिक पहचान रही है। फिर भी, स्वतंत्रता के 75 वर्ष बाद भारतीय शिक्षा व्यवस्था एक भाषिक एकरूपता (Linguistic Uniformity) के दबाव में काम कर रही है। यहाँ अंग्रेज़ी न केवल संचार का माध्यम है, बल्कि यह सामाजिक श्रेणीकरण (Social Stratification) का उपकरण भी बन गई है।

''इंग्लिश मीडियम'' शब्द महज़ स्कूलिंग के एक मॉडल को नहीं दर्शाता, बल्कि एक गहराई से समाहित **संस्थागत विचारधारा** को चिह्नित करता है, जो यह तय करती है कि कौन 'योग्य' है और कौन 'अयोग्य'। जिन छात्रों की प्राथमिक शिक्षा मातृभाषा (Hindi, Tamil, Odia, Telugu, आदि) में हुई हो, वे इस अंग्रेज़ी केंद्रित संरचना में न केवल अकादमिक अवरोध का सामना करते हैं, बल्कि सांस्कृतिक और मानसिक स्तर पर भी संघर्ष करते हैं।

1.2 समस्या की पहचान: आत्महत्या और अदृश्य बहिष्कार

भारत के शीर्ष संस्थानों—AIIMS, IITs, Anna University—में छात्रों द्वारा की गई आत्महत्याएँ अब इतनी ''सामान्य'' हो चुकी हैं कि मीडिया उन्हें ''डिप्रेशन'', ''पारिवारिक दबाव'' या ''निजी विफलता'' कहकर वर्गीकृत कर देता है। परंतु जब ये घटनाएँ बार-बार उन्हीं सामाजिक और भाषिक पृष्ठभूमियों (दलित, आदिवासी, ग्रामीण, और गैर-अंग्रेज़ी माध्यम) से जुड़ी हों, तो यह केवल मानसिक स्वास्थ्य का विषय नहीं रह जाता—बल्कि यह शिक्षा प्रणाली के भीतर व्याप्त भाषिक बहिष्कार (Linguistic Exclusion) और संस्थागत हिंसा (Institutional Violence) का मामला बन जाता है।

अनिल मीणा, बालमुकुंद भारती, धारिया लक्ष्मी, प्रासंथ जैसे छात्र—जो स्कूल स्तर पर टॉपर थे—इन्हें AIIMS और Anna University जैसे संस्थानों में न सिर्फ़ पीछे छोड़ा गया, बल्कि अंततः आत्महत्या जैसे कदम के लिए मजबूर कर दिया गया। यह प्रश्न उठता है: क्या यह 'डिप्रेशन' था, या 'भाषा आधारित बहिष्कार की संस्थागत हिंसा'?

1.3 शोध की आवश्यकता: क्यों यह अध्ययन आवश्यक है?

यह अध्ययन कई कारणों से समयोचित और अनिवार्य है:

1. अब तक आत्महत्या को मुख्यतः मनोवैज्ञानिक या सामाजिक दृष्टिकोण से देखा गया है; परंतु इसका भाषिक संरचना से संबंध विश्लेषण से बाहर रहा है।
2. भारत में अंग्रेज़ी को योग्यता (Merit) का पर्याय मान लिया गया है, जो अन्य भाषाओं के छात्रों को 'कमज़ोर' और 'अयोग्य' की श्रेणी में डाल देता है।
3. अंग्रेज़ी मीडियम सिस्टम अब केवल शैक्षिक मॉडल नहीं रहा—यह राजनीतिक, सांस्कृतिक और प्रशासनिक वर्चस्व का हिस्सा बन चुका है।
4. यह अध्ययन उन छात्रों की आवाज़ बनता है जो आत्महत्या कर गए, जिनकी विफलता को संस्थाएँ 'निजी दुर्बलता' कह कर खारिज करती हैं।

1.4 शोध के उद्देश्य (Objectives of the Study)

1. भाषा और शैक्षिक बहिष्कार के अंतर्संबंध को उजागर करना।
2. अंग्रेज़ी मीडियम सिस्टम की संरचनात्मक असंवेदनशीलता को विश्लेषित करना।
3. अनुभवजन्य केस स्टडीज के ज़रिए यह दिखाना कि आत्महत्याएँ एक सामाजिक-भाषिक दमन की परिणति हैं।
4. फ्रेरे, बौर्डीयू और स्कुटनैब-कांगस के सैद्धांतिक मॉडल्स के माध्यम से एक वैकल्पिक शैक्षिक दृष्टिकोण प्रस्तावित करना।
5. मातृभाषा आधारित शिक्षा की वकालत और भाषिक समावेशन की नीतिगत आवश्यकता को स्पष्ट करना।

1.5 मानवकेंद्रित दृष्टिकोण (Human-Centered Perspective)

यह लेख मात्र एक अकादमिक आलोचना नहीं है। यह उन चुप बच्चों की चीख़ है जो अपनी भाषा में बोलना चाहते थे, पर जिनकी भाषा ने उन्हें बचा नहीं पाया। यह लेख उन सवालों का उत्तर है जो मीडिया ने नहीं पूछे और जो विश्वविद्यालयों ने सुनने से इनकार कर दिया।

यह एक **काउंटर-नैरेटिव** है उस 'अंग्रेज़ी मीडियम सिस्टम' के विरुद्ध, जो हर साल सैकड़ों छात्रों को 'अशब्द' बनाकर शिक्षा की देवी के चरणों में बलि चढ़ा देता है। यह लेख इस सिस्टम की चुप्पी को तोड़ने और उस वैकल्पिक भविष्य की कल्पना करता है, जहाँ हर छात्र अपनी भाषा में सोच सके, सीख सके और जी सके।

II. सैद्धांतिक आधार (THEORETICAL FRAMEWORK)

2.1 अंग्रेज़ी का वर्चस्व और सांस्कृतिक पूँजी का सिद्धांत (English Dominance and Cultural Capital)

फ्रांसीसी समाजशास्त्री पियरे बौर्डीयू (Pierre Bourdieu) के अनुसार, समाज में सत्ता का संचालन केवल आर्थिक पूँजी से नहीं, बल्कि सांस्कृतिक पूँजी (Cultural Capital) के माध्यम से भी होता है। भाषा, विशेषकर 'प्रतिष्ठित भाषा' (prestige language), सामाजिक प्रतिष्ठा और पहुंच प्राप्त करने का एक महत्वपूर्ण स्रोत बन जाती है।

भारत में अंग्रेज़ी ऐसी ही सांस्कृतिक पूँजी का स्वरूप ग्रहण कर चुकी है। अंग्रेज़ी अब केवल एक भाषा नहीं, बल्कि शैक्षणिक, आर्थिक और सामाजिक प्रगति की कुंजी मानी जाती है। इसके परिणामस्वरूप अंग्रेज़ी जानने वाले छात्रों को 'मेधावी' और 'योग्य' माना जाता है, जबकि हिंदी, तमिल, उड़िया या अन्य भारतीय भाषाओं के छात्रों को 'कमज़ोर', 'देहाती', या 'अयोग्य' समझा जाता है (Kumar, 2014, p. 31)। यह वर्गीय भेदभाव का ही एक परिष्कृत रूप है जो भाषा के माध्यम से कार्य करता है।

2.2 प्रतीकात्मक हिंसा (Symbolic Violence) का औज़ार बनी अंग्रेज़ी

बौर्डीयू के एक और महत्वपूर्ण सिद्धांत 'प्रतीकात्मक हिंसा' (Symbolic Violence) के अनुसार, वर्चस्वशाली वर्ग अपने सांस्कृतिक मानकों — जिसमें भाषा प्रमुख है — को सामान्य, श्रेष्ठ और स्वाभाविक घोषित कर देता है। यह उन छात्रों के लिए मानसिक हिंसा बन जाती है जो इन मानकों को आत्मसात नहीं कर सकते।

जैसे, एक छात्र जो विज्ञान, गणित या दर्शन में प्रतिभाशाली है, लेकिन अंग्रेज़ी नहीं जानता, उसे शैक्षणिक रूप से कमतर आंका जाता है। ऐसे छात्रों को शिक्षा व्यवस्था में वह स्थान नहीं मिलता जिसके वे वास्तविक रूप से अधिकारी होते हैं (Kumar, 2014, p. 49)। यह प्रतीकात्मक हिंसा केवल भाषा नहीं, बल्कि आत्मसम्मान और सांस्कृतिक अस्मिता पर भी आघात करती है।

2.3 भाषिकतावाद और भाषिक भेदभाव (Linguicism and Linguistic Discrimination)

टोवे स्कुटनैब-कांगस (Tove Skutnabb-Kangas) के अनुसार, भाषिकतावाद/लिंगुइसिज़्म (Linguicism) वह संरचनात्मक भेदभाव है जिसमें भाषा के आधार पर संसाधनों, अवसरों और अधिकारों का असमान वितरण किया जाता है। भारत में अंग्रेज़ी वही भूमिका निभा रही है जो पश्चिम में श्वेत वर्चस्व निभाता है — एक प्रभुत्वशाली भाषा जो अन्य सभी भाषाओं को हाशिए पर धकेल देती है।

शिक्षा संस्थानों में अंग्रेज़ी को 'वैध भाषा' और अन्य भारतीय भाषाओं को 'स्थानीय', 'अपरिपक्व' या 'कमतर' कहना लिंगुइसिज़्म का स्पष्ट उदाहरण है। हिंदी, बांग्ला, मराठी, तमिल, तेलुगु, उड़िया, या किसी भी भारतीय भाषा में शिक्षा प्राप्त छात्र स्वतः ही 'कम मेरिट वाले' समझे जाते हैं, भले ही उनके बौद्धिक स्तर में कोई कमी न हो (Kumar, 2014, p. 67)।

2.4 फ्रेरे का आलोचनात्मक शिक्षाशास्त्र (Freire's Critical Pedagogy)

ब्राज़ीली शिक्षाशास्त्री पाउलो फ्रेरे (Paulo Freire) के अनुसार, पारंपरिक शिक्षा प्रणाली एक 'बैंकिंग मॉडल' के रूप में कार्य करती है — जिसमें शिक्षक ज्ञानदाता और छात्र निष्क्रिय भंडारण पात्र होते हैं। यह प्रणाली छात्रों की भाषा, संस्कृति और अनुभवों की अवहेलना करती है।

अंग्रेज़ी माध्यम शिक्षा इस बैंकिंग मॉडल का आधुनिक रूप है। फ्रेरे का मानना था कि शिक्षा को संवादात्मक और सहभागी बनाना चाहिए, जहाँ छात्र की भाषा को सम्मान और वैधता मिले। जब तक शिक्षा में अंग्रेज़ी को एकमात्र वैध माध्यम माना जाता रहेगा, तब तक यह शक्ति के असमान वितरण को बनाए रखेगा (Freire, 1970)।

2.5 ग्राम्शी का सांस्कृतिक वर्चस्व (Gramsci's Cultural Hegemony)

एंटोनियो ग्राम्शी (Antonio Gramsci) का 'Cultural Hegemony' सिद्धांत बताता है कि शासक वर्ग किस प्रकार सांस्कृतिक संस्थाओं (जैसे स्कूल, मीडिया, भाषा) के माध्यम से अपने विचार और मूल्य समाज पर थोपता है और उसे 'सामान्य' बना देता है।

भारत में अंग्रेज़ी इसी हेजेमनी का उपकरण है। यह केवल प्रशासन या तकनीकी शिक्षा की भाषा नहीं, बल्कि सत्ता का प्रतिनिधि बन चुकी है। IIT, IIM, AIIMS, UPSC जैसी संस्थाएँ अंग्रेज़ी माध्यम को 'योग्यता का पैमाना' बनाकर सामाजिक हैसियत तय करती हैं। यह वर्चस्व एक प्रकार का 'नैतिक नेतृत्व' नहीं, बल्कि 'संस्थागत वर्चस्व' है जो जनता को अपने ही अधिकारों के विरुद्ध सहमत कर देता है (Gramsci, 1971; Kumar, 2014, p. 59–62)।

2.6 उपनिवेशवाद से लोकतंत्र तक: शिक्षा और भाषा की राजनीति

अंग्रेज़ी शिक्षा की नींव भारत में औपनिवेशिक शासन के दौरान रखी गई थी। मैकॉले की प्रसिद्ध 'मिनट ऑन एजुकेशन' (1835) का उद्देश्य एक ऐसा वर्ग बनाना था जो 'रक्त से भारतीय लेकिन सोच से अंग्रेज़ी' हो — जो शासन की सहायता कर सके। अश्विनी कुमार अपनी पुस्तक *'English Medium System that is Angreji Raj'* में विस्तार से बताते हैं कि कैसे यह वर्गिक भाषा सत्ता का वाहक बन गया। पुस्तक में दर्शाया गया है,

"मैकाले मीनट से पहले ही एक उच्च वर्ग शिक्षित समुदाय सत्ता के करीब पहुँच चुका था। स्वतंत्रता के बाद यही वर्ग अंग्रेज़ी के ज़रिए नौकरशाही, न्यायपालिका और विश्वविद्यालयों पर हावी रहा" (Kumar, 2014, p. 52–54)।

यह विरासत अब एक लोकतांत्रिक भारत में भी बनी हुई है, जहाँ अंग्रेज़ी माध्यम शिक्षा से बाहर रहना, सत्ता से बाहर रहना बन चुका है।

2.7 सैद्धांतिक निष्कर्ष

1. अंग्रेज़ी माध्यम शिक्षा केवल भाषा का चयन नहीं, बल्कि शक्ति-संबंधों का पुनरुत्पादन है।
2. अंग्रेज़ी के आधार पर योग्यता को परिभाषित करना भाषिक असमानता को वैध बनाता है।
3. यह व्यवस्था प्रतीकात्मक हिंसा और लिंगुइसिज़्म के माध्यम से छात्रों के आत्म-सम्मान और अवसरों पर आघात करती है।
4. जब तक सभी भाषाओं को शिक्षा में समान अवसर और मान्यता नहीं मिलती, तब तक शिक्षा लोकतांत्रिक नहीं हो सकती।

III. अनुसंधान विधि (RESEARCH METHODOLOGY)

3.1 शोध का स्वरूप: गुणात्मक दृष्टिकोण (Qualitative Orientation)

यह शोध एक गुणात्मक शोध लेख (Qualitative Research Article) है, जिसका उद्देश्य आँकड़ों की गणना मात्र नहीं, बल्कि उन अनुभवों, पीड़ाओं और संरचनाओं को उजागर करना है जो शिक्षा व्यवस्था में गहराई से समाहित हैं। यह अध्ययन एक मानव-केंद्रित दृष्टिकोण अपनाता है जहाँ प्रत्येक केस को एक "डेटा पॉइंट" के रूप में नहीं, बल्कि एक "न्याय-अन्याय की सामाजिक कथा" के रूप में पढ़ा जाता है।

यह शोध "संख्याओं से अधिक संरचनाओं" (Structures over Statistics) को प्राथमिकता देता है और इसलिए वर्णनात्मक विश्लेषण, केस स्टडीज, मीडिया क्लिपिंग्स, भाषिक-पारिवारिक पृष्ठभूमि, और साक्षात्कार अंशों का उपयोग करता है। यह दृष्टिकोण यह मानता है कि किसी विद्यार्थी का आत्महत्या करना केवल निजी विफलता नहीं है, बल्कि यह एक ऐसी भाषा आधारित व्यवस्था की आलोचना है जो उसे उसकी अपनी आवाज़ में सोचने की अनुमति नहीं देती।

3.2 मुख्य स्रोत: केस स्टडी, मीडिया रिपोर्ट, और मूल पुस्तक (Primary Sources)

शोध के लिए निम्नलिखित स्रोतों का उपयोग किया गया है:

1. **प्रकाशित केस स्टडीज़ और समाचार रिपोर्टें** — जैसे कि अनिल मीणा (AIIMS), बालमुकुंद भारती (AIIMS), प्रासंथ (Tamil Nadu), धारिया लक्ष्मी (Anna University) आदि के आत्महत्या के मामले।
2. **ऑनलाइन समाचार पत्रों के क्लिपिंग्स** — Indian Express, The Hindu, Caravan Magazine, Business Standard आदि से संबंधित रिपोर्ट।
3. **सैद्धांतिक ग्रंथ** — जैसे कि बौर्डीयू, फरेरे, स्कुटनैब-कांगस द्वारा लिखित पुस्तकें एवं शोध-पत्र।

3.3 विधि तकनीकें: मीडिया विश्लेषण + सैद्धांतिक कोडिंग (Methodological Techniques)

3.3.1 मीडिया विश्लेषण (Media Discourse Analysis)

प्रमुख समाचारों के भाषाई फ्रेम को विश्लेषित किया गया — जैसे, आत्महत्या की घटनाओं को किस प्रकार "डिप्रेशन", "निजी असफलता", या "पारिवारिक विवाद" में बदलकर पेश किया जाता है। इस विश्लेषण ने यह स्पष्ट किया कि संस्थाएं भाषा के कारण उत्पन्न बहिष्कार को पहचानने से बचती हैं।

3.3.2 केस स्टडी चयन (Case Study Selection)

केवल उन्हीं आत्महत्या मामलों को चुना गया जो:

- अंग्रेज़ी माध्यम में अकादमिक संघर्ष से जुड़े थे
- ग्रामीण, गैर-अंग्रेज़ीदां या दलित-पिछड़े पृष्ठभूमि से थे
- मीडिया रिपोर्ट या आत्महत्या नोट्स में "भाषा" का संदर्भ मिलता है

3.3.3 सैद्धांतिक कोडिंग (Theoretical Coding)

सभी केस को फ्रेरे के आलोचनात्मक शिक्षाशास्त्र, बौर्डीयू के सांस्कृतिक पूँजी सिद्धांत, और स्कुटनैब-कांगस के भाषिक भेदभाव मॉडल के आलोक में कोड किया गया। प्रत्येक केस में:

- संस्थागत प्रतिक्रिया की असंवेदनशीलता
- अंग्रेज़ी से जूझते छात्र की रणनीतियाँ
- सहपाठियों एवं शिक्षकों का व्यवहार

- परीक्षा, साक्षात्कार, और मूल्यांकन में पक्षपात इन बिंदुओं को व्यवस्थित कोडिंग किया गया।

3.4 सीमाएँ (Limitations)

- आत्महत्या के मामलों पर प्रत्यक्ष साक्षात्कार उपलब्ध नहीं हैं, इसलिए मीडिया रिपोर्ट्स एवं आत्महत्या नोट्स पर निर्भरता रही।
- केस संख्या सीमित रखी गई ताकि विश्लेषण गहराई से हो सके, पर यह संपूर्ण आँकड़ों का प्रतिनिधित्व नहीं करता।
- संस्थानों द्वारा आधिकारिक रूप से आत्महत्या के पीछे भाषा कारण को मान्यता नहीं दी जाती, अतः इसे लक्षणों व द्वितीयक स्रोतों से व्युत्पन्न किया गया।

3.5 निष्कर्ष (Methodological Conclusion)

यह अनुसंधान विधि **अवधारणात्मक, आलोचनात्मक और अनुभवजन्य** है। यह संख्याओं के पीछे छुपे अन्याय को उजागर करने का प्रयास है। इसके माध्यम से यह लेख यह दिखाने का प्रयास करता है कि जब कोई छात्र आत्महत्या करता है, तो यह केवल उसकी व्यक्तिगत विफलता नहीं, बल्कि **शिक्षा की भाषिक राजनीति की एक अप्रकट हिंसा** का परिणाम है।

अगले खंड में हम उन आत्महत्याओं के अनुभवजन्य उदाहरणों को प्रस्तुत करेंगे, जो इस संरचना की नींव को हिला देते हैं।

IV. आत्महत्या के अनुभवजन्य उदाहरण

4.1 अनिल मीणा (AIIMS, 2012): आत्महत्या या संस्थागत बहिष्कार?

अनिल मीणा, राजस्थान के बारां ज़िले से, एक आदिवासी कृषक परिवार से आने वाले पहले पीढ़ी के विश्वविद्यालय छात्र थे। 75% अंकों के साथ 12वीं कक्षा पास करने के बाद उन्होंने AIIMS जैसे अत्यंत प्रतिष्ठित संस्थान में स्थान प्राप्त किया। लेकिन 3 मार्च 2012 को, उन्होंने अपने हॉस्टल रूम में आत्महत्या कर ली। AIIMS प्रशासन ने इसका कारण 'डिप्रेशन' और 'मनोवैज्ञानिक असंतुलन' बताया, जबकि उनके जीवन की घटनाओं का विश्लेषण एक गहरे संरचनात्मक अन्याय की ओर इशारा करता है।

4.1.1 प्रारंभिक कोडिंग (Initial Coding)

इस चरण में डेटा की पंक्ति-दर-पंक्ति कोडिंग द्वारा अनिल के अनुभवों, घटनाओं और प्रतिक्रिया को निकटता से समझा गया। यह सभी कोड प्रतिभागी के शब्दों और कार्यों के करीब रहते हुए तैयार किए गए हैं:

- हिंदी माध्यम से स्कूली शिक्षा (Hindi Medium Background)
- AIIMS में पूर्ण अंग्रेज़ी माध्यम (English-Only Academic Environment)
- व्याख्यान न समझ पाना और स्वयं अनुवाद द्वारा पढ़ाई (Self-Reliant Translation-Based Study)
- साथियों से संवादहीनता (Peer Communication Breakdown)
- शिक्षकों के साथ संपर्क असफल (Administrative Unresponsiveness)
- परीक्षा में अनुपस्थिति और पूरक परीक्षा में असफलता (Attendance-related Denial + Failure)
- मूल्यांकन प्रक्रिया में अविश्वास (Distrust in Evaluation Fairness)

4.1.2 केंद्रित कोडिंग (Focused Coding)

1. भाषा का संकट: क्या AIIMS जैसे संस्थानों में अंग्रेज़ी को ही एकमात्र मान्य शैक्षणिक भाषा मान लेना सभी छात्रों के लिए न्यायसंगत है? अनिल, जिनकी संपूर्ण स्कूली शिक्षा हिंदी माध्यम में हुई थी, अंग्रेज़ी लेक्चर और अंग्रेज़ी की ही टेक्स्टबुक्स से निरंतर संघर्ष कर रहे थे। उन्होंने वर्षभर डिक्शनरी के सहारे स्वयं हिंदी में अनुवाद करके तैयारी की। उनके अपने शब्दों में – "We were toppers in Hindi, now we are failures in English" (Caravan, 2012)। यह वाक्य किसी व्यक्तिगत अनुभव से अधिक एक समूची प्रणाली की असंवेदनशीलता को उजागर करता है।

2. संवादहीन संस्थान: क्या कोई भी संस्थान यह अपेक्षा कर सकता है कि छात्र ऐसी भाषा में क्लास अटेंड करे, जिसे वह समझ ही नहीं सकता? क्या शिक्षण में उपस्थिति से अधिक समझ मायने नहीं रखती? अनिल ने क्लास अटेंड करने के बजाय डिक्शनरी से अनुवाद कर पढ़ना अधिक उपयोगी समझा। लेकिन संस्थान ने सिर्फ 'उपस्थिति की गिनती' की, 'समझ की गहराई' नहीं। मुख्य परीक्षा से केवल कम उपस्थिति के आधार पर वंचित किया गया — जबकि यह उपस्थिति न देने का कारण अंग्रेज़ी लेक्चर की असमर्थता थी। क्या यह अनुशासन है या भाषा आधारित दंड?

3. अकेलापन और हीनता: क्या कोई संस्थान ऐसा वातावरण प्रदान करता है जहाँ एक छात्र अपनी कठिनाइयाँ साझा कर सके? अनिल के लिए यह संभव नहीं था। AIIMS जैसे संस्थानों में शिक्षण केवल अंग्रेज़ी में होता है, और संवाद की एक ही भाषा को वैध माना जाता है। वरिष्ठ छात्र या शिक्षक – कोई भी समर्थन देने की स्थिति में नहीं था। क्या गैर-अंग्रेज़ीदां छात्र के लिए संस्थान में कोई 'मानविक सहायता' या 'भाषिक समर्थन' प्रणाली थी? नहीं।

4. कथित योग्यता का मिथक (Merit Myth): क्या योग्यता को केवल अंग्रेज़ी दक्षता से मापा जाना चाहिए? अनिल जैसे छात्र, जो ग्रामीण भारत में टॉपर थे, अंग्रेज़ी के कारण 'कमज़ोर' और 'अयोग्य' कहे गए। अंग्रेज़ी आधारित मेरिट — क्या यह ज्ञान आधारित है या भाषा आधारित 'फिल्टरिंग टूल'? क्या यह 'मेरिट' वास्तव में प्रतिभा की पहचान करता है या केवल भाषा आधारित चयन करता है?

5. जाति बनाम भाषा का विमर्श: क्या अनिल का संघर्ष केवल एक आदिवासी छात्र होने से जुड़ा था? या यह संघर्ष उस प्रणाली से था जो किसी भी छात्र को – चाहे वह किसी भी जाति का हो – यदि वह अंग्रेज़ी में सहज नहीं है, तो असफलता की ओर ढकेल देती है? यदि कोई सवर्ण छात्र, जो ग्रामीण पृष्ठभूमि से है और हिंदी माध्यम से पढ़ा है, AIIMS में प्रवेश लेता है – क्या उसे हिंदी में लेक्चर

दिए जाते? नहीं। और यदि कोई आदिवासी छात्र अंग्रेज़ी में दक्ष है, तो क्या वह इन कठिनाइयों से गुज़रेगा? शायद नहीं।

इससे यह निष्कर्ष निकलता है कि मूल समस्या जातीय पहचान नहीं, भाषिक पहुँच और सांस्कृतिक पूँजी का असमान वितरण है। जाति इस बहिष्करण को बढ़ा सकती है, लेकिन यह बहिष्करण स्वयं भाषा आधारित शैक्षणिक असमानता का उत्पाद है।

4.1.3 विश्लेषणात्मक निष्कर्ष

अनिल का मामला केवल व्यक्तिगत विफलता नहीं था — यह शिक्षा व्यवस्था द्वारा थोपी गई ऐसी भाषाई संरचना की विफलता थी जो छात्रों को उनकी मूलभाषा में सोचने, समझने और बढ़ने का अवसर नहीं देती। जब तक अंग्रेज़ी ही योग्यता का मापदंड बनी रहेगी, और शिक्षण में संवाद की वैकल्पिक भाषाओं को अवैध घोषित किया जाता रहेगा — तब तक ऐसे आत्महत्याएँ सामाजिक दुर्घटनाएँ नहीं, बल्कि संरचित निष्कासन (Structured Exclusion) मानी जाएँगी। अतः यह आत्महत्या नहीं, एक संस्थागत हत्या है — जो चुपचाप भाषा के नाम पर होती है।

4.2 बालमुकुंद भारती (AIIMS, 2010): आत्महत्या के पीछे छुपा भाषिक बहिष्कार?

बालमुकुंद भारती, मध्यप्रदेश के टीकमगढ़ ज़िले के कुंदेश्वर गाँव से थे। वह एक दलित परिवार से आते थे, जहाँ उनके पिता एक तृतीय श्रेणी कर्मचारी थे। उन्होंने नवोदय विद्यालय से स्कूली शिक्षा प्राप्त की थी और अकादमिक रूप से सर्वश्रेष्ठ छात्रों में से एक थे। उनके पास राष्ट्रपति द्वारा दिया गया उत्कृष्टता प्रमाण पत्र था। इसके बावजूद, AIIMS जैसे संस्थान में प्रवेश पाने के दो वर्षों के भीतर उन्होंने आत्महत्या कर ली। 3 मार्च 2010 को उन्होंने हॉस्टल में फाँसी लगाकर जीवन समाप्त किया — ठीक उसी तारीख़ को जिस दिन दो वर्ष बाद अनिल मीणा ने आत्महत्या की।

4.2.1 प्रारंभिक कोडिंग (Initial Coding)

नवोदय विद्यालय का टॉपर (School Topper – Navodaya Vidyalaya),अंग्रेज़ी में व्याख्यान न समझ पाना (Difficulty in Understanding English Lectures), विश्वविद्यालय में अलगाव और संवादहीनता (Institutional Isolation), मानसिक तनाव और मूल्यांकन का भय (Mental Stress and Assessment Fear), आत्म-संदेह और पहचान संकट (Self-Doubt and Identity Anxiety), प्रशासन द्वारा "डिप्रेशन" के रूप में आत्महत्या को वर्णित करना (Administrative Framing as Depression)

4.2.2 केंद्रित कोडिंग (Focused Coding)

1. भाषा के नाम पर प्रणालीगत अवरोध: क्या यह महज़ संयोग है कि बालमुकुंद, जो नवोदय विद्यालय जैसे प्रतिस्पर्धी संस्थान में टॉपर थे, AIIMS में आने के बाद "डिप्रेस्ड" हो गए? या यह उस भाषिक वातावरण का परिणाम था जहाँ शिक्षण और संवाद केवल अंग्रेज़ी में संभव था, और उनकी हिंदी पृष्ठभूमि को कोई जगह नहीं मिली?

2. आत्मसम्मान का ह्रास: क्या यह संभव है कि बालमुकुंद जैसे होनहार छात्र AIIMS में आते ही अचानक "कमज़ोर" हो जाएँ? उनके साथियों ने बताया कि वह कक्षा में बहुत कम बोलते थे और अक्सर अनुत्तरदायी रहते थे। क्या यह अंग्रेज़ी न बोल पाने का दबाव था, जिसने उनके आत्मविश्वास को तोड़ दिया?

3. संस्थागत संवादहीनता: क्या संस्थान ने यह समझने की कोशिश की कि उनका असहज व्यवहार किस कारण से था? क्या प्रशासन ने भाषा-संबंधी कठिनाइयों को "मानसिक रोग" के रूप में दिखाकर अपनी जवाबदेही से बचने का प्रयास किया?

4. मेरिट का भाषिक संस्करण: क्या हम 'मेरिट' को इतना संकुचित कर चुके हैं कि केवल अंग्रेज़ी में संवाद करने वाले ही "योग्य" माने जाते हैं? क्या राष्ट्रपति सम्मानित छात्र एक अयोग्य अकादमिक बन गया सिर्फ इसलिए क्योंकि वह अंग्रेज़ी में सहज नहीं था?

5. समानता की सतही कल्पना: क्या संविधान प्रदत्त आरक्षण और प्रवेश में समानता संस्थानों के भीतर भाषिक न्याय भी सुनिश्चित करती है? यदि कोई छात्र प्रणाली में दाखिल तो हो गया, पर उसकी भाषा को कोई जगह नहीं मिली — तो क्या वह वास्तविक रूप से समावेशित हुआ?

4.2.3 विश्लेषणात्मक निष्कर्ष

बालमुकुंद का केस हमें यह सोचने पर विवश करता है कि क्या संस्थानों के लिए 'विविधता' महज़ संख्या है, या वह भाषा, संस्कृति और सामाजिक पृष्ठभूमि के प्रति संवेदनशील व्यवहार का आह्वान भी करती है? जब एक नवोदय टॉपर, राष्ट्रपति सम्मानित छात्र, अपनी पहचान से ही कट जाता है — तो यह किसी एक छात्र की त्रासदी नहीं, बल्कि पूरी प्रणाली की विफलता है।

AIIMS जैसे संस्थानों को भाषा आधारित समानता के लिए संरचनात्मक परिवर्तन की आवश्यकता है। जब तक यह नहीं होगा, तब तक बालमुकुंद जैसे छात्र "डिप्रेशन" के नाम पर दफन होते रहेंगे — जबकि उनकी आत्महत्या वास्तव में भाषा के ज़रिए हुई एक धीमी हिंसा है।

4.3 प्रासंथ (Tamil Nadu, 2013): अंग्रेज़ी की दीवार के सामने आत्मसमर्पण

प्रासंथ, तमिलनाडु के शिवकाशी क्षेत्र के एक तमिल माध्यम विद्यालय से पढ़े थे। उन्होंने 12वीं कक्षा में 1100 अंक प्राप्त किए थे — यह उस क्षेत्र में उल्लेखनीय उपलब्धि मानी जाती है। इसके बावजूद, इंजीनियरिंग कॉलेज में दाख़िला लेने के कुछ ही महीनों के भीतर, उन्होंने ट्रेन के सामने कूदकर आत्महत्या कर ली। उनकी आत्महत्या से पहले लिखी गई चिट्ठी में उन्होंने अंग्रेज़ी के कारण पढ़ाई समझ न आने, कॉलेज और हॉस्टल के माहौल में असहजता, और पढ़ाई से निराशा व्यक्त की थी।

4.3.1 प्रारंभिक कोडिंग (Initial Coding)

तमिल माध्यम से स्कूली शिक्षा (Tamil Medium Background), इंजीनियरिंग में रुचि नहीं थी (Lack of Interest in Engineering), कॉलेज में अंग्रेज़ी आधारित शिक्षण (English-Medium Instruction), विषय समझने में कठिनाई (Inability to Comprehend), सहपाठियों से अलगाव (Peer Isolation),

आत्महत्या पत्र में पढ़ाई और भाषा का ज़िक्र (Suicide Note Highlighting English as Barrier)

4.3.2 केंद्रित कोडिंग (Focused Coding)

1. अंग्रेज़ी का दबाव: समझ का संकट या पहचान का संकट? क्या यह संभव है कि एक छात्र, जिसने तमिल माध्यम से उच्च अंक प्राप्त किए, कॉलेज में आकर खुद को "अयोग्य" महसूस करे? प्रासंथ के साथ यही हुआ। पाठ्यक्रम अंग्रेज़ी में था, शिक्षण शैली अंग्रेज़ी में थी, और छात्रों के बीच संवाद भी अंग्रेज़ी में ही अपेक्षित था। ऐसी स्थिति में प्रासंथ जैसे छात्र के लिए स्वयं को अकादमिक रूप से 'योग्य' मानना लगभग असंभव हो गया।

2. सामाजिक अलगाव और 'Invisibility' का बोध: क्या भाषा सामाजिक पहचान को भी अदृश्य बना सकती है? प्रासंथ के सहपाठी उन्हें 'चुप' और 'कमज़ोर' समझते थे। भाषा ने उन्हें केवल अकादमिक रूप से नहीं, सामाजिक रूप से भी हाशिए पर डाल दिया।

3. कॉलेज और परिवार के बीच द्वंद्व: क्या प्रासंथ वास्तव में इंजीनियरिंग पढ़ना चाहते थे, या वे सामाजिक दबाव में थे? उनके पत्र से संकेत मिलता है कि वे इस विषय में रुचि नहीं रखते थे, परंतु 'अच्छा भविष्य' के नाम पर उन्हें इसमें प्रवेश दिलवाया गया। जब उन्हें इस दिशा में कोई सांत्वना नहीं मिली, तो उनके लिए आत्मसमर्पण करना एकमात्र विकल्प रह गया।

4. भाषा का जातीय और वर्गीय तत्त्व: प्रासंथ का मामला एक महत्वपूर्ण प्रश्न उठाता है — क्या अंग्रेज़ी आज सामाजिक 'छद्म-जाति' बन चुकी है? क्या तमिल भाषी ग्रामीण विद्यार्थी, जो एक विशिष्ट जातीय पृष्ठभूमि से आता है, अंग्रेज़ी में असफल होने के बाद केवल अकादमिक नहीं, बल्कि सांस्कृतिक रूप से भी 'अमान्य' समझा जाता है?

5. आत्महत्या को "शोक" नहीं, "संरचना" से जोड़ने की आवश्यकता: प्रासंथ की आत्महत्या को महज़ व्यक्तिगत विफलता या मानसिक असंतुलन कह देना संस्थान को जवाबदेही से मुक्त कर देता है। क्या यह जरूरी नहीं कि हम यह समझें कि जब शिक्षा में भाषा एक ऐसी दीवार बन जाती है, जिसे पार करना असंभव हो — तो आत्महत्या एक व्यक्तिगत निर्णय नहीं, बल्कि एक संरचनात्मक विफलता की घोषणा बन जाती है?

4.3.3 विश्लेषणात्मक निष्कर्ष

प्रासंथ का जीवन और मृत्यु यह स्पष्ट करते हैं कि अंग्रेज़ी को शिक्षा की एकमात्र वैध भाषा बना देना एक घातक विकल्प है। वह तमिल में प्रतिभाशाली थे, पर अंग्रेज़ी में "कमज़ोर" कहलाए। उनकी शिक्षा में रुचि नहीं थी, लेकिन प्रणाली ने उन्हें विकल्पहीन बना दिया।

यह केस इस बात को रेखांकित करता है कि जब शिक्षा व्यवस्था मातृभाषा को अमान्य कर देती है, तब आत्महत्या एक दुर्घटना नहीं, बल्कि **सांस्कृतिक निष्कासन** (Cultural Expulsion) का चरम रूप बन जाती है।

4.4 एस. धारिया लक्ष्मी (Anna University, 2012): अंकों के बावजूद आत्महत्या क्यों?

धारिया लक्ष्मी, तमिलनाडु के विल्लुपुरम ज़िले से थीं — एक किसान की पुत्री, जिन्होंने तमिल माध्यम से पढ़ाई कर 12वीं कक्षा में 92% अंक प्राप्त किए। वह अन्ना विश्वविद्यालय, चेन्नई के प्रतिष्ठित कॉलेज ऑफ़ इंजीनियरिंग, गिंडी (CEG) में सिविल इंजीनियरिंग की छात्रा थीं। उन्होंने पहले सेमेस्टर में 7.85 CGPA अर्जित किया और 93% उपस्थिति दर्ज की, परंतु दूसरे सेमेस्टर में आंतरिक मूल्यांकन में असफलता और भाषा के दबाव ने उन्हें आत्महत्या की ओर धकेल दिया। उन्होंने एक सुसाइड नोट छोड़ा जिसमें पढ़ाई और समझने में कठिनाई का उल्लेख था।

4.4.1 प्रारंभिक कोडिंग (Initial Coding)

तमिल माध्यम से स्कूली शिक्षा (Tamil Medium Schooling), पहले सेमेस्टर में अच्छा प्रदर्शन (Strong Initial Academic Record), अंग्रेज़ी में आंतरिक मूल्यांकन की कठिनाई (Internal Assessment Struggles), आत्महत्या से पूर्व संवाद में चिंता और भय (Expressed Anxiety in Conversations), सुसाइड नोट में "न समझ पाने" की स्वीकृति (Cognitive Disengagement Mentioned in Suicide Note), शिक्षा में अनुकूलन की विफलता (Failure to Adapt in English-Medium Instruction)

4.4.2 केंद्रित कोडिंग (Focused Coding)

1. 'अच्छे अंक' बनाम 'असफलता': एक विरोधाभास क्यों? क्या यह संभव है कि 92% अंक लाने वाली, 93% उपस्थिति दर्ज करने वाली और पहले सेमेस्टर में 7.85 CGPA लाने वाली छात्रा "अयोग्य" हो जाए? यदि हाँ, तो यह कौन-सी प्रणाली है जो प्रदर्शन को मापती है, लेकिन समझ को नहीं? धारिया ने दूसरे सेमेस्टर में आंतरिक मूल्यांकन के दो राउंड में या तो परीक्षा नहीं दी या बहुत कम अंक प्राप्त किए। क्या यह अकादमिक अक्षमता थी, या एक ऐसी भाषा की दीवार जो हर पंक्ति को बोझ बना देती है?

2. अंग्रेज़ी माध्यम का 'छुपा हुआ बहिष्कार': क्या संस्थान ने कभी यह प्रश्न किया कि इतनी मेहनती छात्रा अचानक क्यों पिछड़ने लगी? कक्षा में दिए गए निर्देश, परीक्षा की शैली, संदर्भ पाठ्य सामग्री — सब अंग्रेज़ी में थी। धारिया जैसे छात्र, जिनकी मातृभाषा तमिल है और जो पहली पीढ़ी की कॉलेज गोइंग हैं — उनके लिए यह सब कुछ एक अनुवादित संघर्ष बन जाता है।

3. अनुकूलन का असमान दबाव: क्या संस्थान या शिक्षक यह मानते हैं कि सभी छात्र समान रूप से अंग्रेज़ी में शिक्षा ग्रहण कर सकते हैं? यदि नहीं, तो क्या उनके लिए कोई सेतु कोर्स, अतिरिक्त सहायता या भाषा-सहयोग व्यवस्था उपलब्ध थी? धारिया को कोई समर्थन नहीं मिला। उनकी कठिनाइयाँ उनके "स्वभाव" या "निजी कमजोरी" मानी गईं, जबकि वे प्रणालीगत थीं।

4. असफलता की सामाजिक लज्जा: क्या छात्र के लिए अपनी कठिनाई को साझा करना संभव होता है जब पूरी प्रणाली उसे "कमज़ोर", "अयोग्य" और "बोझ" समझती है? धारिया ने अपने दोस्तों से कहा था — "I am finding studies increasingly difficult." इसका अर्थ है कि वह प्रयास कर रही थीं, लेकिन असमर्थ थीं। उनके लिए असफलता केवल एक शैक्षिक स्थिति नहीं थी, बल्कि एक सामाजिक अस्वीकार्यता का प्रतीक बन चुकी थी।

5. वर्ग, लिंग और भाषा का संगम: धारिया एक ग्रामीण, निम्न-मध्यमवर्गीय, महिला छात्रा थीं। उनके सामने न केवल भाषा की दीवार थी, बल्कि वह सामाजिक

संरचनाओं की त्रिस्तरीय बाधाओं से भी जूझ रही थीं। क्या उनकी आत्महत्या को केवल 'डिप्रेशन' कहना पर्याप्त होगा?

4.4.3 विश्लेषणात्मक निष्कर्ष

धारिया लक्ष्मी की आत्महत्या हमारे लिए यह प्रश्न छोड़ जाती है: क्या शिक्षा प्रणाली केवल अंकों के आधार पर सफलता का निर्धारण करती है, या वह किसी छात्र की समझ, पृष्ठभूमि और संघर्ष को भी महत्व देती है? क्या अंग्रेज़ी को सफलता की पूर्वशर्त मानना ही उस संघर्ष की नींव नहीं है जिससे धारिया जैसे छात्र हार जाते हैं?

यह केस बताता है कि **कक्षा में बैठी छात्रा की चुप्पी भी एक संघर्ष है**, जिसे सुनने की ज़रूरत है। यदि भाषा, लिंग और वर्ग के आधार पर शिक्षा एक असमंजस का जाल बन जाए, तो यह सिर्फ़ ज्ञान का नहीं, जीवन का प्रश्न बन जाता है।

4.5 तेरह वर्षीय कन्नड़ छात्र (Mangalore, 2012): प्रारंभिक शिक्षा में भाषाई टकराव की त्रासदी

यह मामला कर्नाटक के मंगळूरु ज़िले के उल्लाल थाना क्षेत्र के तालपडी गाँव का है, जहाँ 13 वर्षीय एक छात्र ने आत्महत्या कर ली। वह छात्र अब तक कन्नड़ माध्यम से पढ़ाई कर रहा था और हाल ही में 'जॉयलैंड इंग्लिश मीडियम स्कूल' में दाख़िल हुआ था (The Canara Times, 2012)। मीडिया रिपोर्ट के अनुसार, आत्महत्या का तात्कालिक कारण यह बताया गया कि उसकी माँ ने उसे बिस्किट के लिए पैसे नहीं दिए थे। लेकिन जब शाम को वह अपने कमरे में मृत पाया गया, और स्कूल प्रशासन ने घटना पर चुप्पी साध ली — तो यह स्पष्ट हो गया कि कारण अधिक गहरे थे।

स्थानीय लोगों और मीडिया के अनुसार, छात्र को अंग्रेज़ी माध्यम स्कूल में समायोजन में कठिनाई हो रही थी। वह अपने नए सहपाठियों के बीच घुल नहीं पा रहा था, और शिक्षक उसे अंग्रेज़ी न बोल पाने के लिए ताना देते थे। ऐसे संकेत भी मिले कि उस पर ‘‘बोलचाल सुधारने’’ का दबाव था।

4.5.1 प्रारंभिक कोडिंग (Initial Coding)

कन्नड़ माध्यम में पूर्व शिक्षा (Kannada Medium Background), अंग्रेज़ी माध्यम में हाल में प्रवेश (Recent Entry to English Medium), स्कूल में संवादहीनता और सामाजिक अलगाव (Lack of Peer Acceptance), शिक्षकों की आलोचना और तिरस्कार (Teacher Ridicule and Pressure). आत्महत्या का सतही कारण: बिस्किट के पैसे न मिलना (Apparent Trigger: Biscuit Money Refusal), स्कूल प्रशासन की चुप्पी (Institutional Silence)

4.5.2 केंद्रित कोडिंग (Focused Coding)

1. भाषा परिवर्तन का मनोवैज्ञानिक झटका: क्या एक ऐसा छात्र, जिसने अब तक कक्षा, शिक्षक और पाठ्यपुस्तकों को अपनी मातृभाषा कन्नड़ में समझा था, अचानक एक ऐसे वातावरण में स्थानांतरित कर दिया जाए जहाँ सब कुछ — कक्षा शिक्षण, पुस्तकों की भाषा, शिक्षक की शैली, और साथी छात्रों की बातचीत — सब कुछ अपरिचित हो, तो वह कैसे टिक पाएगा? इस छात्र के लिए विद्यालय अब केवल शैक्षणिक संस्था नहीं, बल्कि एक अपरिचित और भयावह सांस्कृतिक स्थान बन गया था। कक्षा शिक्षण और संवाद उसकी समझ से बाहर हो गया था।

2. सामाजिक बहिष्कार और आत्म-पीड़ा: क्या भाषा एक सामाजिक पहचान का वाहक है? हाँ। इस छात्र को अपने नए साथियों द्वारा 'कम बोलने वाला', 'अलग तरह का' समझा गया। शिक्षक भी शायद यही दृष्टिकोण अपनाते रहे। धीरे-धीरे यह छात्र सामाजिक रूप से अदृश्य हो गया — न संवाद में, न गतिविधियों में, और न ही कक्षा की बातचीत में उसकी उपस्थिति महसूस होती थी।

3. संस्था की चुप्पी और जवाबदेही से पलायन: क्या स्कूलों में जवाबदेही केवल शैक्षणिक परिणामों तक सीमित रहनी चाहिए? जॉयलैंड स्कूल प्रबंधन ने न तो छात्र के चित्र उपलब्ध कराए और न ही मीडिया से बात की। यह दर्शाता है कि जब कोई संस्थागत विफलता उजागर होती है, तो संस्थाएं संवाद करने की बजाय खुद को छुपा लेती हैं।

4. आत्महत्या के बहाने या भाषाई परतें? क्या हम मान लें कि एक छात्र ने सिर्फ़ बिस्किट के लिए पैसे न मिलने पर आत्महत्या कर ली? या यह मानें कि जब कोई बच्चा नई भाषा, नए स्कूल, नए वातावरण में 'अपने' को खोज नहीं पाता, तब उसकी मानसिक संरचना इस कदर टूट जाती है कि वह किसी भी छोटे बहाने को 'अंत' में बदल देता है? यह आत्महत्या एक गहरे और धीमे संरचनात्मक संकट की पराकाष्ठा थी।

5. प्राथमिक शिक्षा में भाषिक समावेशन की अनदेखी: क्या हम भाषिक समावेशन की चर्चा केवल विश्वविद्यालय स्तर पर करते हैं? यह केस दर्शाता है कि यह संघर्ष स्कूल की पहली कक्षाओं से ही शुरू हो जाता है। जब तक मातृभाषा आधारित शिक्षा और भाषा संक्रमण (language transition) के लिए संवेदनशीलता नहीं होगी — तब तक कक्षा की हर दीवार किसी के लिए दीवार नहीं, एक जेल बनती रहेगी।

4.5.3 विश्लेषणात्मक निष्कर्ष

13 वर्षीय यह छात्र केवल एक 'घटना' नहीं है, वह एक प्रश्न है — क्या हम अंग्रेज़ी को इतना ज़रूरी बना चुके हैं कि बच्चों को अपनी भाषा से घृणा हो जाए? यह आत्महत्या बताती है कि यदि कोई बच्चा विद्यालय के माहौल में स्वीकार्य महसूस नहीं करता, उसकी भाषा, स्वाभाविकता और संवाद को नकारा जाता है, तो वह चुपचाप मरता नहीं, बल्कि संरचनात्मक बहिष्कार की बलि चढ़ता है।

संदर्भ: The Canara Times (2012). ‘Suicide of 13-year-old boy shrouded in mystery.’ Retrieved from: http://thecanaratimes.com/epaper/index.php/archives/23849

4.6 सम्बुल इशाक (Lucknow, 2013): अंग्रेज़ी की असफलता या संस्थागत असंवेदनशीलता?

यह मामला उत्तर प्रदेश की राजधानी लखनऊ स्थित एम.सी. सक्सेना इंस्टीट्यूट ऑफ़ इंजीनियरिंग एंड मैनेजमेंट का है, जहाँ 19 वर्षीय बी.फार्मा की छात्रा सम्बुल इशाक ने कॉलेज की तीसरी मंज़िल से कूदकर आत्महत्या का प्रयास किया (Business Standard, 2013)। वह गंभीर रूप से घायल हुई। उनके पिता अबू इशाक ने रैगिंग का आरोप लगाया, वहीं सहपाठियों ने बताया कि सम्बुल को अंग्रेज़ी माध्यम के कारण पढ़ाई में कठिनाई हो रही थी और वह अक्सर इसके कारण हताश रहती थीं।

4.6.1 प्रारंभिक कोडिंग (Initial Coding)

अंग्रेज़ी माध्यम कॉलेज में दाख़िला (English-Medium Higher Education Entry), पढ़ाई समझने में कठिनाई (Difficulty in Understanding Coursework), शिक्षण और संवाद की भाषा: अंग्रेज़ी (Instructional Language as Barrier), आत्म-ग्लानि और चुप्पापन (Self-Doubt and Silence), सहपाठियों की उपेक्षा और आलोचना (Peer Ridicule and Exclusion), आत्महत्या का प्रयास: तीसरी मंज़िल से कूदना (Severe Suicide Attempt)

4.6.2 केंद्रित कोडिंग (Focused Coding)

1. अंग्रेज़ी की असफलता या व्यवस्था की? क्या सम्बुल की परेशानी उसकी "भाषाई अक्षमता" थी, या उस व्यवस्था की "भाषिक असंवेदनशीलता" जिसने यह मान लिया कि सभी छात्र अंग्रेज़ी में समान रूप से सीख सकते हैं? वह बी.फार्मा जैसे तकनीकी पाठ्यक्रम में थी, जहाँ पढ़ाई, प्रयोगशाला निर्देश और मूल्यांकन सभी अंग्रेज़ी में होते थे। क्या उसने कभी हिंदी या अपनी सहज भाषा में कोई सहायता प्राप्त की?

2. संस्थागत और सामाजिक बहिष्कार: क्या कोई छात्र यदि अंग्रेज़ी में सहज नहीं है तो वह सिर्फ़ अकादमिक रूप से पिछड़ता है, या वह सामाजिक रूप से भी अदृश्य हो जाता है? सम्बुल के सहपाठियों ने कहा कि वह चुप रहती थीं, संवाद से कतराती थीं, और अक्सर अवसाद में लगती थीं। क्या यह चुप्पी उनकी आंतरिक कमजोरी थी, या उस सामाजिक बहिष्कार का परिणाम थी जो उन्हें 'कमतर' मानता था?

3. शिक्षकों और संस्थान की भूमिका: क्या सम्बुल को कभी शिक्षकों ने भाषा संबंधी कठिनाइयों के लिए कोई विशेष मार्गदर्शन दिया? क्या संस्थान ने ऐसे छात्रों के लिए कोई अतिरिक्त सहायता (remedial support) की व्यवस्था की? आत्महत्या प्रयास के बाद भी कॉलेज ने कोई आधिकारिक स्पष्टीकरण नहीं दिया। यह संस्थागत असंवेदनशीलता की गवाही देता है।

4. रैगिंग बनाम भाषाई हिंसा: पिता ने रैगिंग की आशंका जताई, पर सहपाठियों ने बताया कि उसका संघर्ष भाषा को लेकर था। क्या यह रैगिंग का एक नया रूप नहीं है — जब भाषा को लेकर किसी को सताया जाए, उपहास उड़ाया जाए, या उसे हीन समझा जाए? क्या भाषा आधारित मज़ाक़ सामाजिक हिंसा की परिभाषा में नहीं आता?

5. तकनीकी शिक्षा और भाषिक अनुकूलन: क्या हम तकनीकी शिक्षा को केवल अंग्रेज़ी में ही मान्य मानते हैं? सम्बुल जैसे छात्र, जो अन्यथा योग्य हैं, केवल इसलिए "कमज़ोर" समझे जाते हैं क्योंकि वे अंग्रेज़ी की जटिल शब्दावली और पाठ्यक्रम से जूझ नहीं पाते। क्या ऐसे छात्रों के लिए कोई ब्रिज कोर्स या द्विभाषिक सामग्री उपलब्ध है?

4.6.3 विश्लेषणात्मक निष्कर्ष

सम्बुल इशाक का मामला उन हजारों छात्रों का प्रतिनिधित्व करता है जो तकनीकी या व्यावसायिक शिक्षा में प्रवेश तो ले लेते हैं, लेकिन भाषिक असमानता के कारण धीरे-धीरे एक अनकहे बहिष्कार का अनुभव करते हैं। अंग्रेज़ी का दबाव, सामाजिक उपेक्षा, और संस्थागत चुप्पी — ये सभी उस मानसिक असंतुलन को जन्म देते हैं जो आत्महत्या तक पहुँचा सकता है।

यह आत्महत्या का प्रयास केवल एक छात्र की हताशा नहीं, बल्कि उस व्यवस्था की विफलता है जिसने भाषा को शक्ति और पहचान का औजार बना दिया है।

संदर्भ: Business Standard (2013). 'B.Pharma student attempts suicide'. Retrieved from: https://www.business-standard.com/article/pti-stories/bpharma-student-attempts-suicide-113090400470_1.html

खंड 4.7 सैद्धांतिक कोडिंग, श्रेणी विकास और समेकन (Theoretical Coding, Category Development & Synthesis)

4.7.1 सैद्धांतिक कोडिंग (Theoretical Coding)

यह खंड उन उभरे हुए केंद्रित कोडों के मध्य संबंधों को रेखांकित करता है जो सभी आत्महत्या के मामलों में साझा संरचनात्मक तंतु के रूप में उभरे हैं। ये कोड केवल वर्णनात्मक नहीं, बल्कि परस्पर व्याख्यात्मक संबंध दर्शाते हैं:

कोड	कारण	प्रक्रिया	संदर्भ	परिणाम
अंग्रेज़ी माध्यम में असमर्थता	भाषा संक्रमण की तैयारी नहीं	शिक्षा की मुख्यधारा से कटाव	ग्रामीण/गैर-एलिट पृष्ठभूमि	आत्महत्या/वंचना
संस्थागत संवादहीनता	शिक्षक/प्रशासन की उदासीनता	कोई सहायक तंत्र नहीं	अंग्रेज़ी-केंद्रित शिक्षण	अलगाव, अवसाद
सामाजिक बहिष्कार	भाषा आधारित उपहास	सहपाठियों से दूरी	वर्ग-जाति आधारित अलगाव	आत्महीनता
"मेरिट" का भाषिक पुनर्परिभाषण	अंग्रेज़ी को योग्यता मानना	गैर-अंग्रेज़ीभाषियों को अयोग्य घोषित करना	प्रवेश के बाद बहिष्कार	प्रदर्शन में गिरावट
भाषा आधारित हिंसा	मनोवैज्ञानिक आघात	कोई संवाद नहीं	शिक्षक के दृष्टिकोण	मानसिक टूटन

4.7.2 श्रेणी विकास (Category Development)

इन कोडों को समेकित कर चार मुख्य श्रेणियाँ सामने आती हैं:

1. भाषाई वंचना की संरचना (Structure of Linguistic Deprivation):

- उप-श्रेणियाँ: माध्यम का असंतुलन, शिक्षा में संज्ञानात्मक बाधा, अंग्रेज़ी-केंद्रित योग्यता प्रणाली
- गुणधर्म: असमान अनुकूलन क्षमता, अकादमिक बहिष्कार

2. संस्थागत असंवेदनशीलता और संवादहीनता (Institutional Insensitivity):

- उप-श्रेणियाँ: शिक्षकों की निष्क्रियता, प्रशासन की उदासीनता, उत्तरदायित्व से बचाव

- गुणधर्म: रैगिंग/भाषा का उपहास, काउंसलिंग का अभाव

3. सामाजिक बहिष्कार की भाषा (Language of Social Exclusion):

- उप-श्रेणियाँ: साथियों की दूरी, सांस्कृतिक विस्थापन, समूहों से कटाव
- गुणधर्म: अदृश्यता, आत्महीनता, चुप्पी का विस्तार

4. आत्महत्या: संवादहीन शिक्षा व्यवस्था की पराकाष्ठा (Suicide as Systemic Collapse):

- उप-श्रेणियाँ: सतही कारणों की आड़, मानसिक अस्वस्थता का निर्माण
- गुणधर्म: संरचनात्मक परित्याग, व्यक्ति का विघटन

4.7.3 सैद्धांतिक संश्लेषण और निष्कर्ष (Theoretical Integration and Emergent Interpretation)

इन सभी श्रेणियों से एक समग्र निष्कर्ष उभरता है:

"भारत की अंग्रेज़ी-केन्द्रित शिक्षा व्यवस्था न केवल सामाजिक-आर्थिक विषमता को पुनःस्थापित करती है, बल्कि भाषिक आधार पर छात्रों का एक अदृश्य बहिष्कार रचती है — यह बहिष्कार कक्षा के भीतर चुप्पी, हीनता, और संवादहीनता के रूप में पनपता है और चरम अवस्था में आत्महत्या का कारण बन सकता है।"

यह शोध स्पष्ट करता है कि आत्महत्या महज़ एक मानसिक स्वास्थ्य समस्या नहीं, बल्कि **संस्थागत भाषा नीति का प्रत्यक्ष दुष्परिणाम** है। यदि भाषा का समावेश सुनिश्चित नहीं किया गया, तो शैक्षणिक संस्थान प्रतिभा के पोषक नहीं, उनके विनाश के कारक बनते रहेंगे।

V. अंग्रेज़ी माध्यम का संरचनात्मक अन्याय (STRUCTURAL INJUSTICE OF ENGLISH-MEDIUM EDUCATION)

5.1 भूमिका

यह खंड भारत में अंग्रेज़ी माध्यम शिक्षा की संस्थागत असमानताओं और अंतर्निहित वर्चस्ववादी ढांचे का विश्लेषण करता है। आत्महत्या के अनुभवजन्य मामलों से यह स्पष्ट हो गया कि भाषा केवल संप्रेषण का माध्यम नहीं, बल्कि शक्ति, पहुँच और योग्यता निर्धारण की व्यवस्था का हिस्सा बन गई है। अंग्रेज़ी अब 'भाषा' नहीं, बल्कि 'बैरिकेड' (Barricade) है — जो विद्यार्थियों को उनके सांस्कृतिक, सामाजिक और भाषिक परिवेश के आधार पर मुख्यधारा से या तो जोड़ता है या काट देता है। यह खंड इस भाषाई अन्याय को वैचारिक और अनुभवजन्य दोनों स्तरों पर खोलता है।

5.2 वर्गीय और ग्रामीण-शहरी विभाजन में भाषा का कार्य

5.2.1 अंग्रेज़ी का वर्चस्व: एक सामाजिक अनुशासन

Pierre Bourdieu का 'Linguistic Capital' का सिद्धांत बताता है कि समाज में कुछ भाषाएँ दूसरों की तुलना में अधिक मूल्यवान मानी जाती हैं। भारत में अंग्रेज़ी इस तरह की "सांस्कृतिक पूँजी" का सबसे शक्तिशाली उदाहरण है। अंग्रेज़ी जानना केवल एक भाषिक कौशल नहीं, बल्कि एक सामाजिक स्थिति का प्रतीक बन गया है — जो व्यक्ति अंग्रेज़ी में संवाद कर सकता है, वह स्वतः ही 'योग्य', 'आधुनिक', 'सभ्य' और 'प्रतिष्ठित' मान लिया जाता है।

Antonio Gramsci के 'Cultural Hegemony' के सिद्धांत के अनुसार, जब कोई शासक वर्ग अपनी सांस्कृतिक धारणाओं और भाषा को समाज का मानक बना देता है, तो यह वर्चस्व केवल बलपूर्वक नहीं, बल्कि सामाजिक सहमति के माध्यम से भी स्थापित होता है। यही कारण है कि समाज के अधिकांश हिस्से अंग्रेज़ी को आत्मसात करने की आकांक्षा रखते हैं, भले ही वह उन्हें बहिष्कृत करती हो।

Paulo Freire की 'Critical Pedagogy' हमें चेताती है कि यदि शिक्षा व्यवस्था छात्रों के सांस्कृतिक और भाषाई यथार्थ से कट जाए, तो वह मुक्ति का नहीं, दमन का माध्यम बन जाती है। भारत में अंग्रेज़ी माध्यम शिक्षा उसी प्रकार की संरचना बन गई है जो छात्र की सामाजिक पूँजी की उपेक्षा कर, एक कृत्रिम मापदंड लागू करती है।

Tove Skutnabb-Kangas के अनुसार यह केवल बहिष्कार नहीं, बल्कि 'Linguistic Genocide' है — जब एक भाषा या उसकी सांस्कृतिक वैधता को नष्ट किया जाए। भारत में यह प्रक्रिया उस समय शुरू होती है जब बच्चों को उनकी मातृभाषा में सोचने, समझने और संवाद करने की स्वाभाविक क्षमता को छोड़कर एक विदेशी भाषा के माध्यम से ज्ञानार्जन करने को मजबूर किया जाता है।

इस प्रकार अंग्रेज़ी का वर्चस्व केवल शैक्षणिक नीति का निर्णय नहीं, बल्कि एक *सामाजिक अनुशासन* है, जो वर्गीय और भाषिक विभाजन को संस्थागत रूप देता है।

5.2.2 अंग्रेज़ी माध्यम और सामाजिक अनुकूलन का संकट

अंग्रेज़ी माध्यम की शिक्षा ग्रामीण और निम्न-मध्यमवर्गीय छात्रों के लिए सिर्फ़ भाषाई चुनौती नहीं, बल्कि एक सामाजिक और सांस्कृतिक चुनौती भी बन जाती है। ये छात्र न केवल अंग्रेज़ी में संवाद करने में असहज होते हैं, बल्कि कक्षा की संस्कृति, शिक्षण शैली और सामाजिक व्यवहार में भी स्वयं को अलग-थलग पाते हैं।

Bourdieu इसे 'Symbolic Violence' कहते हैं — जब कोई शिक्षा व्यवस्था छात्र की सांस्कृतिक पूँजी को अमान्य करके, उसे स्वयं को 'अयोग्य' महसूस करने पर मजबूर कर दे। इस तरह की अस्वीकृति अक्सर *स्वयं छात्र को अपनी असफलता के लिए दोषी मानने* के रूप में सामने आती है। यह सामाजिक संरचना उस छात्र को कभी यह नहीं बताती कि दोष भाषा में नहीं, बल्कि व्यवस्था की एकरूपता में है।

यह संकट केवल भाषा तक सीमित नहीं रहता। ग्रामीण पृष्ठभूमि से आने वाले छात्र शहरी कक्षा-संस्कृति में प्रवेश करते ही एक *संवाद शून्यता* से घिर जाते हैं:

- शिक्षकों से प्रश्न पूछने में झिझक,
- सहपाठियों से आत्मीय संवाद में असमर्थता,
- समूह कार्यों और प्रेजेंटेशन में सक्रिय भागीदारी में कमी,
- और अंततः संस्थागत जीवन में आत्मग्लानि, हीनता और मानसिक अवसाद।

Gramsci के अनुसार, छात्र इस वर्चस्व को चुनौती भी नहीं देता क्योंकि वह इसे अपनी ही असफलता समझता है। Paulo Freire के 'Banking Model of Education' की आलोचना इस संदर्भ में महत्वपूर्ण है, जहाँ छात्र को केवल एक निष्क्रिय ग्राहक की तरह ज्ञान 'जमा' करवाया जाता है, न कि एक सक्रिय सांस्कृतिक प्राणी की तरह समझ विकसित करने का अवसर दिया जाता है।

Tove Skutnabb-Kangas के शब्दों में यह एक ऐसी प्रक्रिया है जिसमें एक छात्र को अपनी भाषा और सांस्कृतिक पहचान से काटकर, एक ऐसे ढाँचे में ढाला जाता है जो अंततः उसकी आत्म-संरचना को नष्ट कर देता है।

इस प्रकार, अंग्रेज़ी माध्यम में अनुकूलन का संकट एक गहरे **वर्गीय और सांस्कृतिक संघर्ष** की अभिव्यक्ति है — जिसे शिक्षा व्यवस्था 'निजी असफलता' के रूप में प्रस्तुत करती है, जबकि यह स्वयं उस व्यवस्था की सामूहिक विफलता है।

5.3 अंग्रेज़ी माध्यम और मेरिट का मिथक

5.3.1 मेरिट का भाषाई पुनर्परिभाषण

भारत की सबसे प्रतिष्ठित परीक्षाओं — UPSC, JEE, NEET, GATE, आदि — में अंग्रेज़ी माध्यम और साथ ही तथाकथित 'कृत्रिम हिंदी' को एक प्रभावी भाषाई छन्नी (Linguistic Filter) के रूप में इस्तेमाल किया जाता है। यह छन्नी विद्यार्थियों की भाषिक पृष्ठभूमि के आधार पर उन्हें प्रतियोगिता से बाहर करने का एक औपचारिक तरीका बन चुकी है।

CSAT (Civil Services Aptitude Test) का प्रारूप विशेष रूप से इस भाषाई विषमता को तीव्र करता है। वर्ष 2011 में प्रारंभ किए गए CSAT पैटर्न के बाद हिंदी माध्यम से आने वाले विद्यार्थियों की सफलता दर में एक नाटकीय गिरावट दर्ज की गई। इसकी मूल वजह यह थी कि CSAT में शामिल कंप्रीहेंशन आधारित प्रश्नों का हिंदी अनुवाद इतना कृत्रिम और शास्त्रीय शैली का होता था कि छात्र प्रश्न की मूल भावना को समझ ही नहीं पाते थे।

''इस कृत्रिम हिंदी का अनुवाद छात्र के लिए 'अनजानी भाषा' बन जाता है। जब तक छात्र यह समझे कि प्रश्न पूछा क्या गया है, तब तक परीक्षा का समय समाप्त हो चुका होता है'' (Kumar, 2014, p. 72).

इस अनुवादित हिंदी का स्वरूप ऐसा होता है जिसमें ऐसे शब्द प्रयोग किए जाते हैं जो न तो दैनिक जीवन में सुनाई देते हैं, न ही ग्रामीण या सामान्य पाठक वर्ग की समझ में आते हैं। उदाहरण के लिए, सरल अंग्रेज़ी वाक्य ''What is the role of the executive?'' का अनुवाद ''कार्यपालिका की कर्तव्यपरायणता की संव्याख्या करें'' जैसे अस्वाभाविक शब्दों में किया जाता है। यह ''हिंदी'' दरअसल अंग्रेज़ी व्यवस्था की भाषाई छाया है — जो अंग्रेज़ी के वर्चस्व को ही बनाए रखती है।

यह दुर्भाग्यपूर्ण था कि इस पूरे मुद्दे को जन-आंदोलन में केवल ''CSAT हटाओ'' के नारे तक सीमित कर दिया गया। आंदोलन के नेताओं और छात्र संगठनों ने 'हिंदी' और 'अंग्रेज़ी' के बीच के इस गहरे भाषिक राजनीति को सही ढंग से नहीं समझा। नतीजा यह हुआ कि CSAT को तो बनाए रखा गया, पर अंग्रेज़ी कंप्रीहेंशन को सिर्फ़ ''क्वालीफाइंग'' कर दिया गया, और कृत्रिम हिंदी को वैधता दे दी गई — UPSC ने अपनी वेबसाइट पर इसका शब्दकोष (Glossary) तक प्रकाशित कर दिया। यानी, असली समस्या जस की तस रही।

यह कहना भी सही नहीं होगा कि CSAT से पहले हिंदी माध्यम के छात्र पूरी तरह सहज थे। CSAT से पहले भी प्रश्नपत्रों में हिंदी अनुवाद सामान्यतः होता था, पर वह संक्षिप्त और तुलनात्मक रूप से समझने योग्य होता था — एक लाइन का प्रश्न, एक लाइन का अनुवाद। विद्यार्थी यदि किसी वाक्यांश को हिंदी में न समझ पाते तो वे तुरंत अंग्रेज़ी में देख लेते थे। परंतु CSAT में लंबे कंप्रीहेंशन के कृत्रिम अनुवाद ने इस सुविधा को नष्ट कर दिया।

आंदोलन के भीतर भी इस भाषा-संबंधी विषमता को सही से रेखांकित करने का प्रयास हुआ। लेखक स्वयं मंचों पर जाकर इसे स्पष्ट करने का प्रयास कर रहे थे, परंतु आंदोलन पर कब्ज़ा कर चुके ठेकेदार किस्म के छात्र नेताओं ने उन्हें कभी मंच नहीं दिया। परिणामस्वरूप, भाषिक वंचना का असली सवाल हाशिए पर चला गया, और संघर्ष केवल सतही विरोध तक सिमट गया।

इस समूचे प्रकरण से यह स्पष्ट होता है कि:

- मेरिट को भाषा के आधार पर गढ़ा गया है।
- यह 'मेरिट' शहरी, अंग्रेज़ीदां अभ्यर्थियों को अनुकूल करती है।
- और कृत्रिम हिंदी का प्रयोग गैर-अंग्रेज़ी माध्यम के छात्रों को 'भाषाई उलझाव' में डालने के लिए एक ढका-छिपा औजार बन चुका है।

अतः, जब तक भाषा की राजनीतिक संरचना को समझे बिना केवल परीक्षा पैटर्न में बदलाव की माँग की जाती रहेगी, तब तक भाषाई न्याय की संभावना आगे नहीं बढ़ेगी

5.3.2 साक्षात्कार और प्रस्तुति में भाषाई भेदभाव

साक्षात्कार स्तर पर यह असमानता और बढ़ जाती है। छात्र यदि अंग्रेज़ी में सहज नहीं हैं, तो उन्हें ''कम आत्मविश्वासी'', ''कम संप्रेषण कुशल'' कहा जाता है, जबकि यह केवल भाषिक विसंगति होती है।

''साक्षात्कारों में अनेक बार छात्र के उत्तर की गुणवत्ता से अधिक महत्त्व उसकी प्रस्तुति (Presentation) को दिया जाता है, और यह प्रस्तुति अंग्रेज़ी में होनी चाहिए — यही 'गुप्त नियम' है'' (Kumar, 2014, p. 89).

5.4 शिक्षण संस्थानों की अंतर्निहित असंवेदनशीलता

5.4.1 संस्थानिक संरचना और शिक्षक व्यवहार

भारत के प्रमुख संस्थानों — जैसे AIIMS, IITs, IIMs — में शिक्षण की भाषा मुख्यतः अंग्रेज़ी है। परंतु यह केवल भाषा की बात नहीं है; यह एक संस्थागत संस्कृति है जो मानती है कि अंग्रेज़ी में दक्षता ही छात्र की 'योग्यता' का पैमाना है। शिक्षक और संस्थागत तंत्र यह मानकर चलते हैं कि सभी छात्र अंग्रेज़ी में निपुण होंगे — और यदि वे नहीं हैं, तो यह उनकी अपनी कमी है। इस एकतरफा अपेक्षा से ऐसे छात्रों को मानसिक रूप से अलग-थलग कर दिया जाता है जिनकी स्कूली या सामाजिक पृष्ठभूमि अंग्रेज़ी केंद्रित नहीं रही है।

''कक्षा में शिक्षक केवल अंग्रेज़ी में बोलते हैं, पुस्तकें अंग्रेज़ी में होती हैं, और कक्षा की चर्चाएँ भी अंग्रेज़ी में — ऐसे में एक ग्रामीण या गैर-अंग्रेज़ी पृष्ठभूमि का छात्र धीरे-धीरे चुप हो जाता है, आत्मसंदेह से भर जाता है।'' (Kumar, 2012)

Paulo Freire के अनुसार यह एक प्रकार का "शैक्षिक दमन" है, जहाँ शिक्षा मुक्ति का नहीं, बल्कि नियंत्रण और वर्चस्व का माध्यम बन जाती है। ऐसे शिक्षक, जो छात्र की सांस्कृतिक पूँजी को पहचानते ही नहीं, उसके भीतर से सीखने की जिज्ञासा को समाप्त कर देते हैं।

5.4.2 पाठ्यपुस्तक और पाठ्यचर्या का एकभाषिक स्वरूप

तकनीकी और उच्च शिक्षा संस्थानों में अधिकांश पाठ्यपुस्तकें अंग्रेज़ी में होती हैं — वे भी मूलतः विदेशी लेखकों द्वारा लिखित, जिनमें भारतीय संदर्भ का अभाव होता है। अनुवादित संस्करण उपलब्ध तो होते हैं, पर उनकी भाषा कृत्रिम, शास्त्रीय और जटिल होती है, जिससे छात्र या तो मूल अंग्रेज़ी पढ़ने को बाध्य होता है, या पूरी तरह से समझ में असफल होता है।

"पाठ्यपुस्तकों का हिंदी (और अन्य भारतीय भाषा) अनुवाद इतना कठिन और अस्वाभाविक होता है कि वह छात्रों को ज्ञान की ओर ले जाने के बजाय उन्हें और उलझा देता है।" (Kumar, 2014, p. 97)

AIIMS और IIT जैसे संस्थानों में रेफरेंस मैटीरियल, लैब मैनुअल्स, परीक्षा निर्देश, और अकादमिक नोटिस — सब कुछ अंग्रेज़ी में ही होते हैं। यह छात्रों को यह संदेश देता है कि अंग्रेज़ी ही वैध भाषा है, और मातृभाषाएँ केवल घरेलू उपयोग तक सीमित हैं।

Tove Skutnabb-Kangas इसे 'Linguistic Exclusion' कहती हैं — जो धीरे-धीरे छात्रों को शिक्षा से वंचित करता है, भले ही वह संस्थान में नामांकित हो।

इस प्रकार, संस्थागत संरचना और पाठ्यचर्या — दोनों — एक ऐसी एकभाषिक व्यवस्था को दर्शाते हैं जो भाषिक विविधता को नहीं, बल्कि *भाषिक समरूपता* को बढ़ावा देती है। यह समरूपता अंततः शिक्षा के लोकतांत्रिक आदर्श को तोड़ती है, और केवल उन्हीं को आगे बढ़ने देती है जो अंग्रेज़ी वर्चस्व को आत्मसात कर सकें।

5.5 अंग्रेज़ी माध्यम और मनोवैज्ञानिक प्रभाव

भाषा केवल संप्रेषण का माध्यम नहीं होती, वह हमारी पहचान, आत्मविश्वास और मनोवैज्ञानिक संतुलन का भी आधार बनती है। अंग्रेज़ी माध्यम की शिक्षा, जब एक विद्यार्थी के लिए समझ की बाधा बन जाती है, तब वह केवल शैक्षिक असफलता नहीं, बल्कि गहरे मनोवैज्ञानिक संकट की ओर भी ले जाती है।

AIIMS के छात्र अनिल मीणा हों या अन्ना विश्वविद्यालय की छात्रा धारिया लक्ष्मी — इन सभी मामलों में यह देखा गया कि भाषा न समझ पाने की स्थिति ने उन्हें न केवल शैक्षणिक रूप से हाशिए पर डाल दिया, बल्कि मानसिक अवसाद और आत्मग्लानि की अवस्था में भी पहुँचा दिया।

Paulo Freire के अनुसार जब छात्र को यह बार-बार बताया जाए कि वह 'अयोग्य' है, तो वह इस संदेश को 'आत्म-सत्य' (self-truth) मानने लगता है। अंग्रेज़ी माध्यम शिक्षा यही करती है — वह ग्रामीण, गैर-अंग्रेज़ीदां विद्यार्थियों को यह महसूस कराती है कि उनमें कुछ मूलभूत कमी है।

यह मनोवैज्ञानिक क्षति तीन रूपों में सामने आती है:

1. आत्म-संदेह (Self-doubt): छात्र अपनी बौद्धिक क्षमता पर भरोसा खो देता है।
2. आत्म-ग्लानि (Guilt): उसे लगता है कि वह संस्थान की अपेक्षाओं पर खरा नहीं उतर पा रहा है।
3. अकेलापन (Isolation): वह न शिक्षकों से संवाद कर पाता है, न सहपाठियों से।

"मैं धीरे-धीरे चुप हो गया। कक्षा में कुछ समझ नहीं आता था। मित्र भी नहीं बनते थे। लगा मैं कहीं गलत आ गया हूँ।" — (एक ग्रामीण छात्र का कथन, Kumar, 2012)

Tove Skutnabb-Kangas इसे 'Psycho-linguistic Trauma' कहती हैं — जब भाषा के कारण छात्र अपनी पहचान और आत्म-गौरव को खोने लगता है।

Gramsci के अनुसार, यह केवल छात्र की विफलता नहीं, बल्कि उस सांस्कृतिक वर्चस्व की सफलता है जो समाज को यह यकीन दिला देता है कि *जो अंग्रेज़ी में नहीं बोल सकता, वह सफल नहीं हो सकता*।

अतः अंग्रेज़ी माध्यम शिक्षा केवल शैक्षणिक संकट नहीं, बल्कि एक मानसिक और सांस्कृतिक संघर्ष भी है — जो हजारों छात्रों को धीरे-धीरे आत्म-बहिष्करण (self-elimination) की ओर धकेलता है। यह वही बिंदु है जहाँ 'भाषा' एक अकादमिक विषय से बढ़कर *अस्तित्व* का प्रश्न बन जाती है।

VI. संस्थागत पूर्वग्रह और बहिष्करण (Institutional Bias and Exclusion)

6.1 प्रस्तावना: संस्थान क्या वास्तव में 'निष्पक्ष' हैं?

भारत में अंग्रेज़ी माध्यम शिक्षा के संदर्भ में एक आम मिथक यह है कि शैक्षणिक संस्थान निष्पक्ष होते हैं — यानी यहाँ केवल 'मेरिट' का मूल्यांकन होता है। लेकिन पिछले खंडों में वर्णित अनुभवजन्य साक्ष्य और सिद्धांतात्मक विश्लेषण यह स्पष्ट करते हैं कि संस्थानों की यह निष्पक्षता केवल एक भ्रम है। वास्तव में, उच्च शिक्षण संस्थानों की संरचना, प्रवेश प्रक्रिया, शिक्षण माध्यम और मूल्यांकन प्रणाली — सभी में गहरे पूर्वग्रह और बहिष्करण के तंतु गुँथे हुए हैं।

6.2 संस्थानों की भाषिक असंवेदनशीलता: AIIMS, IITs और IIMs के उदाहरण

भारत के प्रमुख शैक्षणिक संस्थान – जैसे AIIMS, IITs, और IIMs – केवल चयन प्रक्रिया तक सीमित नहीं हैं, बल्कि उनकी **शिक्षण प्रणाली**, **पाठ्यचर्या**, और **कैंपस संस्कृति** तक में अंग्रेज़ी का लगभग एकाधिकार है। यदि कोई प्रतिभाशाली छात्र किसी क्षेत्रीय भाषा माध्यम से पढ़कर इन संस्थानों की प्रवेश परीक्षा में सफल भी हो जाए, तब भी आगे की संपूर्ण शिक्षा अंग्रेज़ी में होती है। ऐसे में छात्र की सफलता एक उपलब्धि न होकर मानसिक, सामाजिक और भाषाई चुनौती बन जाती है। यह अनुभव उसके लिए 'शिखर पर पहुँचने' जैसा नहीं, बल्कि 'असहाय पर्वतारोहण' जैसा होता है — जहाँ न भाषा है, न संसाधन, न सहारा।

6.2.1 प्रवेश एवं चयन प्रक्रिया में भाषा का पक्षपात

AIIMS, IIT, UPSC, NDA, CDS जैसे संस्थानों की **प्रवेश एवं चयन प्रक्रिया** परीक्षाओं में भाषा एक अदृश्य छन्नी (invisible filter) का

कार्य करती है। हिंदी व अन्य भारतीय भाषाओं में दिए गए प्रश्न-पत्रों का अनुवाद इतना कृत्रिम होता है कि छात्र प्रश्न की मूल भावना समझ ही नहीं पाते। ऐसे में वे प्रारंभिक स्तर पर ही छँट जाते हैं। जो विद्यार्थी कठिन परिश्रम से परीक्षा पास कर भी लेते हैं, वे साक्षात्कार में इस कारण विफल हो जाते हैं कि वे अंग्रेज़ी में 'प्रस्तुत' नहीं हो पाते।

पूर्व UPSC अध्यक्ष का कथन इस पूर्वग्रह को और भी स्पष्ट करता है: *"हिंदी क्षेत्र के छात्रों को तो हिंदी भी नहीं आती।"* यह कथन न केवल भाषाई असंवेदनशीलता को दर्शाता है, बल्कि यह भी प्रमाणित करता है कि संस्थान स्वयं एक वर्चस्वशाली भाषा (अंग्रेज़ी) को योग्यता का पैमाना मान चुके हैं।

6.2.2 शिक्षण का एकमात्र माध्यम: अंग्रेज़ी

AIIMS और IIT जैसे संस्थानों में न पाठ्यक्रम की सामग्री, न व्याख्यान, न संदर्भ पुस्तकों का अनुवाद – कुछ भी मातृभाषा में उपलब्ध नहीं होता। शिक्षण पूरी तरह अंग्रेज़ी में होता है, और छात्रों को यह अनकहा संदेश मिलता है कि उनकी अपनी भाषाएँ "अशिक्षित", "अप्रस्तुत" और "गैर-वैज्ञानिक" हैं।

"AIIMS के छात्र अनिल मीणा ने अपनी असमर्थता के चलते डिक्शनरी से शब्दशः अनुवाद कर के अध्ययन किया। फिर भी, कक्षा की अनुपस्थिति के कारण उन्हें परीक्षा से वंचित कर दिया गया।" (Indian Express, 2012)

इस प्रकार संस्थागत शिक्षा केवल भाषा की असहजता नहीं देती, बल्कि छात्र के आत्म-सम्मान और आत्मविश्वास को भी गहराई से आहत करती है।

6.2.3 कैंपस संस्कृति और संवाद की बाधा

IITs और IIMs जैसी संस्थाओं की कैंपस संस्कृति भी पूरी तरह अंग्रेज़ी-केंद्रित होती है। कक्षा शिक्षण, संगोष्ठियाँ, छात्रवृत्तियाँ, क्लब, हॉस्टल बातचीत – सभी संवाद, प्रस्तुति और सामाजिक जुड़ाव अंग्रेज़ी में होता है। जिन छात्रों की पृष्ठभूमि अंग्रेज़ी की नहीं है, वे इन प्रक्रियाओं से स्वयं को अलग-थलग महसूस करने लगते हैं।

Antonio Gramsci के 'Cultural Hegemony' सिद्धांत के अनुसार, यह केवल भाषाई दबाव नहीं, बल्कि सांस्कृतिक प्रभुत्व है – एक ऐसी स्थिति जहाँ प्रभुत्वशाली संस्कृति इतनी हावी हो जाती है कि वंचित संस्कृति के लोग स्वयं को हीन मानने लगते हैं।

इसलिए AIIMS, IIT, और IIM जैसे संस्थानों में समस्या केवल शिक्षण पद्धति की नहीं, बल्कि उस समूची संस्थागत सोच की है, जो अंग्रेज़ी को ज्ञान, संवाद और सफलता का एकमात्र मानक मानती है। यही सोच अंततः विद्यार्थियों को बहिष्करण की ओर धकेलती है।

6.3 शिक्षक और मूल्यांकन प्रणाली में पक्षपात

6.3.1 साक्षात्कार में भाषा आधारित भेदभाव

Paulo Freire के Banking Model के अनुसार, शिक्षा व्यवस्था अक्सर उन छात्रों को वंचित कर देती है जो उसकी 'भाषा' और 'प्रस्तुति शैली' में फिट नहीं बैठते। UPSC, IIT-JEE, AIIMS के साक्षात्कारों में बार-बार यह बात सामने आती है कि छात्रों की बौद्धिक क्षमता को कम करके आंका गया क्योंकि वे अंग्रेज़ी में अपने विचार सहजता से व्यक्त नहीं कर पाए।

"एक छात्र जिसने AIIMS में टॉप किया था, उसे इंटरव्यू में कहा गया – 'तुम डॉक्टर बनने के लायक नहीं हो क्योंकि तुम fluent English में बात नहीं कर पाते।'" (Caravan, 2013)

6.3.2 शिक्षकों की छिपी हुई अपेक्षाएँ

AIIMS, IIT, IIM जैसे संस्थानों में अधिकांश शिक्षक शहरी अंग्रेज़ी पृष्ठभूमि से आते हैं। वे अनजाने में ही उन छात्रों को अधिक महत्त्व देते हैं जो उनकी भाषा, शैली और व्यवहार के अनुरूप होते हैं। यह 'Hidden Curriculum' छात्रों के आत्मविश्वास और प्रदर्शन को प्रभावित करता है।

Tove Skutnabb-Kangas इसे 'Symbolic Elimination' कहती हैं — यानी छात्र को औपचारिक रूप से नहीं, बल्कि सांस्कृतिक असंगति के ज़रिए शिक्षा से बाहर कर देना।

6.4 संस्थान और आत्महत्या: अप्रत्यक्ष संबंध?

अनिल मीणा, बालमुकुंद भारती, प्रासंथ, धारिया लक्ष्मी — इन सभी के आत्महत्या मामलों में संस्थानों की भूमिका एक निष्क्रिय दर्शक की नहीं, बल्कि सक्रिय उत्पीड़क की रही है। छात्रों को किसी भी स्तर पर ऐसा समर्थन नहीं मिला जिससे वे अपनी भाषा या पृष्ठभूमि के साथ जुड़ाव महसूस करते। उन्हें न मानसिक स्वास्थ्य सुविधा मिली, न शैक्षणिक मदद, न सहायक भाषा संसाधन।

Paulo Freire इस स्थिति को "Submersion" कहते हैं — जब छात्र की चेतना इतनी दबा दी जाती है कि वह प्रतिरोध भी नहीं कर पाता।

Tove Skutnabb-Kangas के अनुसार जब कोई छात्र बार-बार अपनी भाषा, पहचान और मूल्य को नकारा हुआ पाता है, तो वह धीरे-धीरे आत्म-उपेक्षा की स्थिति में पहुँच जाता है। यही वह मोड़ होता है जहाँ बहिष्करण केवल शैक्षणिक नहीं, बल्कि अस्तित्वगत बन जाता है।

निष्कर्षतः, भारत के प्रमुख शिक्षण संस्थान 'निष्पक्षता' के बजाय एक विशेष भाषाई और सांस्कृतिक ढाँचे के पक्षधर हैं। वे योग्यता की परिभाषा को केवल अंग्रेज़ी दक्षता और प्रस्तुति कौशल तक सीमित कर देते हैं — और इसके बाहर के छात्र, चाहे जितने भी मेहनती और प्रतिभाशाली क्यों न हों, अस्वीकार कर दिए जाते हैं।

यह संस्थागत बहिष्करण है — और यही आत्महत्या, अवसाद और आत्मग्लानि के पीछे छिपा हुआ तंत्र है।

VII. माध्यमगत अनुकूलन बनाम प्रणालीगत परिवर्तन (MEDIUM ADAPTATION VS. SYSTEMIC REFORM)

7.1 प्रस्तावना: समस्या छात्र में है या व्यवस्था में?

भारत की शैक्षणिक संस्थाओं और नीति निर्माताओं के सामने एक मौलिक प्रश्न खड़ा होता है — क्या छात्रों को अंग्रेज़ी-माध्यम की आवश्यकताओं के अनुरूप ढालने की ज़िम्मेदारी छात्र की है, या यह व्यवस्था की ज़िम्मेदारी है कि वह छात्र के भाषाई-सांस्कृतिक परिवेश को समझे और उसके अनुसार बदले?

अब तक की प्रवृत्ति यह रही है कि छात्र को अनुकूलन (adaptation) का जिम्मेदार माना गया है:

- यदि छात्र अंग्रेज़ी नहीं समझता, तो उसे ''कमज़ोर'' घोषित कर दिया जाता है,
- यदि वह संवाद नहीं कर पाता, तो ''असंप्रेषणीय'',
- और यदि वह विफल होता है, तो ''अयोग्य''।

इसमें व्यवस्था की कोई जवाबदेही नहीं तय की जाती। जबकि Paulo Freire के अनुसार शिक्षा का कार्य छात्र को 'ढालना' नहीं, बल्कि उसके जीवन संसार से जुड़कर उसे मुक्तिकामी बनाना होना चाहिए।

7.2 वर्तमान प्रणाली: छात्र को दोष दो, व्यवस्था को नहीं

7.2.1 कोचिंग और सपोर्ट सिस्टम का निजीकरण

संस्थागत व्यवस्था यह मानकर चलती है कि छात्र पहले से अंग्रेज़ी में निपुण होगा। जो छात्र इस कसौटी पर खरे नहीं उतरते, वे कोचिंग, ट्यूशन, लैंग्वेज लैब, प्राइवेट कक्षाएँ आदि का सहारा लेते हैं। इन सभी विकल्पों की कीमत होती है — आर्थिक भी और मनोवैज्ञानिक भी।

''अंग्रेज़ी में पिछड़ापन संस्थागत विफलता नहीं, छात्र की व्यक्तिगत कमजोरी मानी जाती है।'' — (Kumar, 2014)

इस प्रकार अंग्रेज़ी का संकट एक निजी समस्या बना दी जाती है, जबकि यह मूलतः नीति और व्यवस्था का संकट है।

7.2.2 सफल के उदाहरण, विफल के बहिष्कार

जब कोई ग्रामीण छात्र अंग्रेज़ी के अनुकूल होकर सफल हो जाता है, तो उसे उदाहरण के रूप में प्रस्तुत किया जाता है। जैसे, कई शिक्षक कहते हैं:

''हमारे कॉलेज से पहले भी एक छात्र AIIMS गया था, उसने अंग्रेज़ी सीखी और सफल हुआ — तो आप क्यों नहीं हो सकते?''

यह तर्क Freire के Banking Model की तरह ही दोषपूर्ण है, जहाँ छात्र की परिस्थिति को नज़रअंदाज़ कर दिया जाता है। जो छात्र असफल हो जाते हैं, उनकी असफलता को व्यक्तिगत नैतिक असफलता के रूप में देखा जाता है — न कि एक सामूहिक प्रणालीगत असफलता के रूप में।

7.3 क्या समाधान छात्र का 'ढलना' है?

7.3.1 भाषाई कोचिंग और 'भाषा सुधार' का भ्रम

कई संस्थान अब 'स्पोकन इंग्लिश' और 'लैंग्वेज इम्प्रूवमेंट' कार्यक्रम चलाते हैं। इनका उद्देश्य छात्र को अंग्रेज़ी में दक्ष बनाना है, परंतु यह समाधान आंशिक है। यह मानता है कि:

- अंग्रेज़ी ही एकमात्र वैध भाषा है,
- अन्य भाषाओं में अध्ययन करना या शिक्षा पाना अवैध या द्वितीयक है,
- छात्र की अपनी भाषा उसके आत्म-विश्वास और बौद्धिक क्षमता की सीमा है।

Freire इसको शिक्षा की ''उपनिवेशवादी'' प्रवृत्ति मानते हैं — जब छात्र को उसकी अपनी जड़ों से काटकर एक प्रभुत्वशाली संस्कृति में ढालने की कोशिश की जाती है।

7.4 प्रणालीगत परिवर्तन: भाषा में बहुलता, शिक्षा में समावेशन

7.4.1 मातृभाषा आधारित बहुभाषी शिक्षा

Tove Skutnabb-Kangas के अनुसार शिक्षा में 'linguistic human rights' सुनिश्चित करने का एकमात्र उपाय यह है कि प्राथमिक और माध्यमिक स्तर पर शिक्षा मातृभाषा में हो, और उच्च शिक्षा में द्विभाषिक/त्रिभाषिक ढाँचे का प्रयोग किया जाए। इसका तात्पर्य यह नहीं कि अंग्रेज़ी को हटाया जाए, बल्कि यह कि उसे एक विकल्प के रूप में, न कि बाध्यता के रूप में प्रस्तुत किया जाए।

7.4.2 संस्थागत सहायक ढाँचा

- पाठ्यक्रम का अनुवाद,
- द्विभाषिक शिक्षकों की नियुक्ति,
- स्थानीय भाषाओं में साक्षात्कार,
- और छात्र सहायता समूहों की स्थापना — ये सभी प्रणालीगत परिवर्तन छात्र के भाषा और संस्कृति को मान्यता देने की दिशा में हैं।

''प्रणालीगत परिवर्तन का अर्थ है संस्थान का छात्र के पास आना — न कि छात्र का स्वयं को संस्थान के लायक साबित करना।'' — (Field Notes, Kumar, 2012)

7.4.3 Freirean शिक्षा: संवाद और स्वायत्तता

Paulo Freire जिस ''डायलॉगिक एजुकेशन'' की बात करते हैं, उसमें शिक्षक और छात्र दोनों ज्ञान के सह-निर्माता होते हैं। ऐसे में भाषा कोई दीवार नहीं, सेतु बन जाती है। छात्र को वह भाषा दी जाती है जिसमें वह सोच सकता है, प्रश्न कर सकता है, उत्तर दे सकता है।

7.5 निष्कर्ष

छात्रों को 'ढालने' का दृष्टिकोण, दरअसल, शिक्षा के लोकतंत्र के विरुद्ध है। यह सोच उस व्यवस्था को वैध ठहराती है जो बहुसंख्यक विद्यार्थियों की भाषाओं, अनुभवों और जीवन स्थितियों को नकारती है। इसके स्थान पर आवश्यकता है प्रणालीगत परिवर्तन की — जहाँ शिक्षा बहुभाषिक, समावेशी और मानवीय हो। Freire, Gramsci, Skutnabb-Kangas और Bourdieu जैसे विचारकों के सिद्धांतों से यह स्पष्ट होता है कि शिक्षा में भाषा का प्रश्न केवल भाषा का नहीं, बल्कि सत्ता, संस्कृति और अस्तित्व का प्रश्न है।

इसलिए, अब समय है कि हम ''छात्र को बदलो'' की नीति से हटकर ''संस्थान को बदलिए'' की ओर बढ़ें — तभी भाषा, शिक्षा और आत्महत्या के बीच की त्रासदी को तोड़ा जा सकता है।

VIII. दक्षिण भारत के संदर्भ में अंतर्विरोध (SOUTH INDIAN CONTRADICTIONS)

8.1 प्रस्तावना: भाषायी राजनीति बनाम भाषायी न्याय

दक्षिण भारत, विशेषतः तमिलनाडु, ऐतिहासिक रूप से भाषायी राजनीति का गढ़ रहा है। 1960 के दशक में हुए हिंदी विरोधी आंदोलनों ने भाषा को सांस्कृतिक अस्मिता और राजनीतिक स्वायत्तता के प्रतीक के रूप में स्थापित किया। किंतु जब हम यह देखते हैं कि अंग्रेज़ी को उसी उग्रता से चुनौती नहीं दी गई, तो यह प्रश्न उठता है: क्या भाषायी न्याय का संघर्ष केवल हिंदी तक सीमित था? क्या

अंग्रेज़ी, जो औपनिवेशिक सत्ता की भाषा थी, उस पर नीतिगत चुप्पी एक *"internalized domination"* नहीं है?

8.2 हिंदी का विरोध और अंग्रेज़ी का आत्मसात

8.2.1 "No Hindi" आंदोलन का ऐतिहासिक परिप्रेक्ष्य

1950 और 60 के दशकों में तमिलनाडु में हिंदी विरोधी आंदोलनों ने केंद्र सरकार की त्रिभाषा नीति का तीव्र विरोध किया। 1965 में हुए व्यापक आंदोलन के पश्चात राज्य ने स्कूलों में हिंदी को अनिवार्य करने से इंकार कर दिया। यह विरोध द्रविड़ पार्टियों की विचारधारा का हिस्सा बन गया। परिणामस्वरूप, तमिलनाडु में आज भी त्रिभाषा सूत्र लागू नहीं है। लेकिन, प्रभाव यह हुआ कि हिंदी के बहिष्कार की आड़ में "सब कुछ अंग्रेज़ी" के चलन को बढ़ावा मिला और उच्च शिक्षा में अंग्रेजी का वर्चस्व बढ़ गया। 1967 से सत्ता में रही द्रविड़ पार्टियों (DMK और AIADMK) ने स्कूल स्तर पर अंग्रेजी की अनिवार्यता के साथ तमिल माध्यम को प्रोत्साहन दिया। परंतु अपवादों को छोड़ दें तो, उच्च शिक्षण विशेषकर प्रोफ़ेशनल कॉलेजों में अंग्रेज़ी माध्यम मुख्य माध्यम बना रहा। विडंबना यह है कि जिस प्रकार हिंदी का विरोध हुआ, उसी प्रकार अंग्रेज़ी को वैकल्पिक के बजाय अनिवार्य भाषा बना दिया गया।

8.2.2 अंग्रेज़ी को विकल्प नहीं, अनिवार्यता बनाना

2016 में मद्रास हाईकोर्ट के बाहर तमिल को न्यायिक कार्यवाहियों की भाषा बनाने के लिए जनांदोलन हुआ, परंतु न तो न्यायपालिका ने सकारात्मक संकेत दिए, और न ही राज्य सरकार ने इसे लागू करने में तत्परता दिखाई। मद्रास हाई कोर्ट में तमिल को कार्यकारी भाषा बनाने हेतु दायर याचिका पर केंद्र सरकार ने 2014 में सुप्रीम कोर्ट में दलील दी कि उच्च न्यायालयों की भाषा अंग्रेज़ी ही रहेगी (*The Hindu, 2014; Times of India, 2016*)। परंतु इस थोपी गई अंग्रेजी के विरुद्ध कोई आंदोलन नहीं खड़ा हुआ। यह स्पष्ट करता है कि हिंदी विरोध के समानांतर अंग्रेज़ी से अलगाव का कोई व्यवस्थित प्रयास नहीं हुआ।

8.3 आत्महत्याएँ: तमिल भाषी छात्रों की मौन त्रासदी

8.3.1 धारिया लक्ष्मी और प्रासंथ के केस

धारिया लक्ष्मी और प्रासंथ दोनों तमिल माध्यम से पढ़े छात्र थे, जिन्हें अंग्रेज़ी माध्यम के इंजीनियरिंग कॉलेजों में समझने और संवाद करने में कठिनाई हुई। दोनों ने आत्महत्या की, और उनके नोट्स/पत्रों में अंग्रेज़ी के कारण उपजे दबाव का स्पष्ट उल्लेख था। *"मेरी पढ़ाई ठीक नहीं चल रही... मैं क्लास की बातें नहीं समझ पाती।"* — धारिया लक्ष्मी का सुसाइड नोट

8.3.2 सामाजिक बहिष्कार और संवादहीनता

तमिल माध्यम से पढ़े छात्र अंग्रेज़ी माध्यम कॉलेजों में स्वयं को सामाजिक रूप से अलग-थलग महसूस करते हैं। *Freire* के *"internalized oppression"* के सिद्धांत के अनुसार, जब एक छात्र अपनी भाषा के कारण बार-बार उपेक्षा और विफलता का अनुभव करता है, तो वह स्वयं को अयोग्य मानने लगता है। यह स्थिति आत्मघाती मनोवृत्ति को जन्म देती है।

8.4 हिंदी विरोध बनाम अंग्रेज़ी स्वीकार्यता -भाषिक विरोधाभास का विश्लेषण

Gramsci के *Cultural Hegemony* सिद्धांत के अनुसार, जब एक प्रभुत्वशाली भाषा और संस्कृति इस तरह सामान्यीकृत कर दी जाती है कि वह समाज की "सहज स्वीकृति" बन जाए, तो विरोध का कोई स्वाभाविक ढाँचा नहीं बचता। तमिलनाडु में हिंदी विरोध एक जनांदोलन बना, जबकि अंग्रेज़ी को 'सफलता की भाषा' मानकर चुपचाप स्वीकार कर लिया गया। इसका अर्थ यह नहीं है कि लोग पीड़ित नहीं हैं, इसका अर्थ यह है कि नेतृत्व को इससे समस्या नहीं है। यही बात हाल ही में 'मराठी-मानस' पर भी लागू होती है — जहाँ वे गैर-मराठी भाषियों को प्रताड़ित कर रहे हैं, वहीं आंदोलन का नेतृत्व करने वाली पार्टियों के नेताओं के बच्चे अच्छे इंग्लिश मीडियम स्कूलों में पढ़ रहे हैं। नेतृत्व को समस्या अंग्रेजी से नहीं, हिंदी से है। ताकि लोग भाषाओं के नाम पर बँटे रहें और उनकी राजनीतिक रोटी सेंकी जाती रहे।

8.5 निष्कर्ष

तमिलनाडु में हिंदी विरोध भाषिक अस्मिता की रक्षा का एक आंदोलन था, पर अंग्रेज़ी के विरुद्ध ऐसा कोई सुसंगत आंदोलन नहीं उभरा। इसका परिणाम यह हुआ कि छात्रों को एक ओर अपनी मातृभाषा से वंचित होना पड़ा, और दूसरी ओर अंग्रेज़ी के दबाव में आकर आत्मघाती निर्णयों का सामना करना पड़ा।

इस खंड से यह सिद्ध होता है:

- हिंदी के विरोध और अंग्रेज़ी की स्वीकृति के बीच भाषिक न्याय का वास्तविक संकट दब गया।
- *Freire* की चेतावनी — *"To speak a true word is to transform the world"* — तब तक अपूर्ण है जब तक छात्रों को उनकी भाषा में बोलने और सोचने की आज़ादी नहीं दी जाती।
- *Skutnabb-Kangas* के अनुसार यह *"Linguicism"* है — जब भाषा के आधार पर छात्र की योग्यता को नकार दिया जाए।
- और *Gramsci* के अनुसार यह *Cultural Hegemony* का उदाहरण है — जब शोषण को स्वाभाविक मान लिया जाए।

दक्षिण भारत को अपनी भाषिक अस्मिता को संरक्षित करने के साथ-साथ अंग्रेज़ी वर्चस्व को भी आलोचनात्मक रूप से पुनःपरिभाषित करना होगा। अन्यथा मातृभाषा और भाषिक न्याय की वास्तविक मांग केवल प्रतीकात्मक रह जाएगी।

IX. विश्लेषण और विमर्श (COMPARATIVE ANALYSIS AND DISCUSSION)

9.1 प्रस्तावना: आत्महत्याओं को एक सामाजिक-संरचनात्मक घटना के रूप में पढ़ना

अब तक प्रस्तुत आत्महत्या के केस अध्ययन, संस्थागत असंवेदनशीलता, अंग्रेज़ी माध्यम के वर्चस्व, और भाषिक विस्थापन की घटनाओं को एक व्यापक सामाजिक और सैद्धांतिक फ्रेम में विश्लेषित करना अनिवार्य है। यह स्पष्ट हो चुका है कि आत्महत्या केवल एक व्यक्तिगत या मानसिक स्वास्थ्य संकट नहीं, बल्कि एक बहुस्तरीय प्रणालीगत हिंसा का परिणाम है – जिसमें भाषा, वर्ग, संस्कृति और संस्थागत संरचना की भूमिका निर्णायक है।

9.2 सैद्धांतिक मैपिंग: पाँच प्रमुख अंतःप्रवृत्तियाँ (Meta-Themes)

9.2.1 भाषा केवल माध्यम नहीं, शक्ति-संरचना है

Pierre Bourdieu के "Linguistic Capital" और "Symbolic Violence" सिद्धांत के अनुसार, अंग्रेज़ी भाषा केवल संवाद का माध्यम नहीं, बल्कि एक वैधता (Legitimacy) और योग्यता (Merit) प्राप्त करने की मुद्रा है।

- AIIMS, IITs, UPSC जैसी संस्थाएँ भाषा के इस प्रतीकात्मक वर्चस्व को वास्तविक संरचनात्मक प्रवेशद्वार में बदल देती हैं।
- जिनके पास यह पूँजी नहीं है, वे बाहरी बना दिए जाते हैं — चाहे वे कितने भी मेधावी क्यों न हों।

9.2.2 शैक्षणिक संस्थान सांस्कृतिक फिल्टर की तरह कार्य करते हैं

Antonio Gramsci के 'Cultural Hegemony' सिद्धांत से यह समझा जा सकता है कि शिक्षण संस्थान केवल ज्ञान के स्रोत नहीं, बल्कि प्रभुत्वशाली संस्कृति के पुनरुत्पादक (reproducers) हैं।

- जो छात्र शहरी, अंग्रेज़ीदां, उच्च-मध्यमवर्गीय पृष्ठभूमि से आते हैं, वे संस्थानों के 'छिपे पाठ्यक्रम' (Hidden Curriculum) में स्वाभाविक रूप से फिट हो जाते हैं।
- बाकी छात्रों के लिए संस्थान एक अनुकूलन योग्य 'सिस्टम' नहीं, बल्कि एक 'संघर्ष स्थल' बन जाता है।

9.2.3 आत्महत्या = सामाजिक बहिष्कार + मनोवैज्ञानिक क्षरण

Tove Skutnabb-Kangas के 'Linguistic Genocide' सिद्धांत और Paulo Freire की 'Critical Pedagogy' को जोड़कर हम यह निष्कर्ष निकाल सकते हैं कि:

- जो छात्र लगातार अपनी भाषा और संस्कृति के प्रति संस्थागत अस्वीकार्यता अनुभव करते हैं, वे एक अंतहीन आत्म-उपेक्षा में डूब जाते हैं।
- यह भावनात्मक क्षरण (erosion) अंततः आत्महत्या जैसी दुखद परिणति की ओर ले जाता है।

9.2.4 हिंदी विरोध बनाम अंग्रेज़ी स्वीकार्यता: भाषाई विमर्श की अधूरी रणनीति

तमिलनाडु जैसे प्रदेशों में जहाँ हिंदी विरोध का सशक्त इतिहास है, वहीं अंग्रेज़ी का वर्चस्व बिना प्रश्न किए स्वीकार कर लिया गया। यह विरोधाभास दर्शाता है कि भाषाई आंदोलन अधूरे रहे हैं — उन्होंने भाषिक न्याय के बजाय भाषिक राजनीति को आगे बढ़ाया।

9.2.5 मेरिट का पुनर्परिभाषण आवश्यक है

AIIMS, UPSC, JEE जैसी परीक्षाओं में अंग्रेज़ी के ज़रिए मेरिट का निर्धारण किया जाता है। लेकिन:

- जब परीक्षा के प्रश्नपत्र अंग्रेज़ी में होते हैं,
- साक्षात्कार अंग्रेज़ी में होते हैं,
- और शिक्षकों की धारणा अंग्रेज़ी क्षमता से जुड़ी होती है, तब मेरिट एक निष्पक्ष मापदंड नहीं, बल्कि एक भाषिक-आधारित चयन प्रणाली बन जाती है।

9.3 तुलनात्मक तालिका: केसों का अंतःसंगठन

छात्र	भाषा पृष्ठभूमि	संघर्ष	संस्थान	परिणाम
अनिल मीणा	हिंदी	अंग्रेज़ी में पाठ समझ न आना	AIIMS	आत्महत्या
बालमुकुंद भारती	हिंदी	प्रदर्शन में गिरावट	AIIMS	आत्महत्या
प्रासंथ	तमिल	सामाजिक अलगाव	निजी इंजीनियरिंग कॉलेज	आत्महत्या
धारिया लक्ष्मी	तमिल	असफलता और शर्म	Anna University	आत्महत्या
चंद्रा	तमिल	आत्मसंकोच और संवादहीनता	सरकारी स्कूल	मानसिक संघर्ष
13 वर्षीय छात्र	कन्नड़	शिक्षक दबाव और असमर्थता	Joyland EMS	आत्महत्या
सम्बुल इशाक	हिंदी	अंग्रेज़ी और सामाजिक दबाव	B.Pharm College	आत्महत्या प्रयास

9.4 Freire की चेतावनी: Banking Model बनाम Dialogic Education

Freire के अनुसार वर्तमान शिक्षा व्यवस्था छात्रों को केवल ज्ञान-ग्राही मानती है — यानी एक खाली पात्र जिसमें सूचनाएँ भरी जाती हैं।

- इसमें न छात्र की भाषा का महत्व है,
- न संस्कृति का,
- न ही उसकी संवेदनशीलता का।

वहीं Dialogic Education मॉडल छात्र को एक साझेदार, एक सवाल पूछने वाला, और एक सक्रिय ज्ञान निर्माता मानता है। इस मॉडल में भाषा की बहुलता को बाधा नहीं, बल्कि संसाधन माना जाता है।

9.5 निष्कर्ष: आत्महत्या एक संकेत है — 'प्रणालीगत हिंसा' का

यदि इतने सारे छात्र — अलग-अलग राज्यों, भाषाओं और संस्थानों से — केवल भाषा और आत्मसंकोच के कारण आत्महत्या करते हैं, तो यह व्यक्तिगत संकट नहीं है। यह एक सामाजिक चेतावनी है — कि हमारी शिक्षा व्यवस्था बहुभाषिकता, सांस्कृतिक विविधता और मानवीय गरिमा को स्थान नहीं देती।

इस विश्लेषण से यह स्पष्ट होता है कि:

- अंग्रेज़ी माध्यम शिक्षा एक संरचनात्मक अन्याय प्रणाली है,
- संस्थागत पूर्वग्रह और 'मेरिट' का मिथक छात्रों को आत्महत्या की कगार तक पहुँचा देते हैं,

- समाधान केवल भाषाई सुधार नहीं, बल्कि पूर्ण प्रणालीगत परिवर्तन है।

अतः यह अनिवार्य हो जाता है कि हम Freire, Bourdieu, Gramsci, Skutnabb-Kangas जैसे विचारकों के मार्गदर्शन में एक नई भाषा नीति, एक नया मूल्यांकन दृष्टिकोण और एक समावेशी शिक्षा प्रणाली की ओर बढ़ें। भविष्य की पीढ़ियाँ तभी सुरक्षित होंगी — जब उनकी भाषा, उनकी संस्कृति, और उनका मौन भी शिक्षा में स्थान पाएगा।

X. निष्कर्ष और सुझाव (CONCLUSION AND RECOMMENDATIONS)

10.1 निष्कर्ष: भाषा, शिक्षा और आत्महत्या के बीच अंतर्संबंध

यह शोध आलेख इस बात की पुष्टि करता है कि भारत की वर्तमान अंग्रेज़ी-माध्यम आधारित शिक्षा व्यवस्था न केवल भाषिक असमानता को बढ़ावा देती है, बल्कि वह संरचनात्मक रूप से बहुसंख्यक ग्रामीण, गरीब और गैर-अंग्रेज़ीदां विद्यार्थियों को संस्थागत बहिष्कार की ओर धकेलती है। इस बहिष्कार का चरम रूप आत्महत्या है — जो कि व्यक्तिगत नहीं, बल्कि शैक्षणिक प्रणाली का सामूहिक और संस्थागत उत्तरदायित्व है।

अनिल मीणा, बालमुकुंद भारती, धारिया लक्ष्मी, प्रासंथ, सम्बुल इशाक और कई अन्य आत्महत्याएँ इस गहरे संकट के दृश्य प्रमाण हैं। Gramsci के अनुसार यह वर्चस्व केवल शारीरिक नहीं, वैचारिक होता है — और अंग्रेज़ी का प्रभुत्व भारतीय शिक्षा प्रणाली में ऐसा ही वैचारिक प्रभुत्व बन चुका है।

Freire की Banking Education Model की आलोचना, Skutnabb-Kangas की Linguistic Genocide अवधारणा, Bourdieu की Symbolic Violence की थ्योरी और Cultural Capital के सिद्धांत, सभी यह इंगित करते हैं कि भाषा एक सामाजिक अधिकार है — और जब यह अधिकार छीना जाता है, तो उसका असर केवल परीक्षा परिणामों तक सीमित नहीं रहता, वह जीवन और मृत्यु का भी निर्धारक बन जाता है।

10.2 प्रमुख निष्कर्ष:

1. भाषा शक्ति है: अंग्रेज़ी केवल एक भाषा नहीं, बल्कि एक सामाजिक और शैक्षिक सत्ता-संरचना है।
2. आत्महत्या संस्थागत विफलता है: छात्र की आत्महत्या को व्यक्तिगत विफलता न मानकर, उसे संस्थागत असंवेदनशीलता के संकेत के रूप में देखा जाना चाहिए।
3. मेरिट का पुनर्परिभाषण आवश्यक है: अंग्रेज़ी आधारित मूल्यांकन प्रणाली मेरिट को वास्तविक रूप में नहीं आंकती।
4. भाषाई न्याय की आवश्यकता: मातृभाषा आधारित बहुभाषी शिक्षा ही समावेशी और न्यायसंगत शिक्षा का आधार बन सकती है।
5. प्रणालीगत परिवर्तन अपरिहार्य है: छात्रों को ढालने की बजाय, संस्थानों को बदलने की ज़रूरत है।

10.3 नीतिगत सुझाव (Policy Recommendations)

10.3.1 शिक्षा नीति में बहुभाषिकता का समावेशी क्रियान्वयन

- प्रारंभिक शिक्षा में मातृभाषा आधारित बहुभाषिक शिक्षण मॉडल को अपनाया जाए, जिसमें हिंदी, तमिल, बांग्ला, मराठी आदि भाषाओं के साथ अंग्रेज़ी को संवादात्मक सह-भाषा के रूप में शामिल किया जाए।
- हिंग्लिश (हिंदी+English), बिंग्लिश (बंगला+English), तमिलिश (तमिल+English) जैसे द्वैभाषिक मॉडल, शिक्षण-अधिगम की वास्तविकता और भाषिक विविधता के बीच सेतु के रूप में कार्य कर सकते हैं। यह मॉडल न तो अंग्रेज़ी को वर्चस्वशाली बनाता है और न ही मातृभाषा को निष्क्रिय।
- यह नीति न केवल सरकारी विद्यालयों में बल्कि निजी शिक्षण संस्थानों में भी अनिवार्य की जाए, जिससे सामाजिक वर्गों के मध्य भाषिक अवसर की समानता सुनिश्चित हो।
- विद्यार्थियों को माध्यम-चयन का स्वायत्त विकल्प दिया जाए, ताकि वे अपनी भाषाई सुविधा और आत्मविश्वास के अनुरूप अध्ययन कर सकें।

10.3.2 पाठ्यचर्या और मूल्यांकन में भाषिक समावेशन

- सभी राष्ट्रीय/राज्य स्तरीय प्रतियोगी परीक्षाओं में प्रश्नपत्र, मूल्यांकन एवं संवाद का अवसर प्रत्येक भारतीय भाषा में समान रूप से सुनिश्चित किया जाए।
- 'मानक हिंदी' की बाध्यता के स्थान पर लोकप्रचलित और प्रयोग-उन्मुख हिंदुस्तानी शैली को प्राथमिकता दी जाए। कठिन पारिभाषिक शब्दों को अंग्रेज़ी ब्रैकेट सहित सहज हिंदी/स्थानीय भाषा में अनुवादित किया जाए।
- साक्षात्कार प्रणाली में भाषिक लचीलापन लाया जाए। इंटरव्यू बोर्ड की संरचना इस प्रकार हो कि उसमें कम से कम 33% सदस्य ग्रामीण, गैर-अंग्रेज़ी पृष्ठभूमि से हों, और सभी सदस्यों को भाषिक-संवेदनशीलता और क्षेत्रीय विविधता के प्रति प्रशिक्षण प्रदान किया जाए।

10.3.3 संस्थानों में भाषिक-संवेदनशीलता का निर्माण

- प्रत्येक उच्च शिक्षा संस्थान में द्वैभाषिक संचार तंत्र लागू किया जाए – जिसमें सूचना, संवाद और प्रशासनिक प्रक्रिया मातृभाषा एवं अंग्रेज़ी दोनों में हो।
- Hidden Curriculum (गुप्त पाठ्यक्रम) की भाषा-संबंधी पूर्वधारणाओं को चुनौती देने हेतु, शिक्षक प्रशिक्षण को अनिवार्य बनाया जाए।
- संस्थानों में भाषा-सहयोगी कार्यक्रम (Language Buddy Systems), छात्र सहायता समूह, और सामुदायिक शिक्षण मॉडल की स्थापना हो जो विद्यार्थियों के भाषिक संघर्ष को साझा रूप में सुलझाने में सहायक बनें।

10.3.4 आत्महत्या-निवारण के लिए बहुस्तरीय नीति ढाँचा

- सभी उच्च शिक्षा संस्थानों में मनो-सामाजिक परामर्श एवं भाषिक सहायता केंद्र स्थापित किए जाएँ, जहाँ विद्यार्थियों को उनके भाषाई अवरोधों और उससे उत्पन्न तनावों से उबरने के लिए मार्गदर्शन मिले।
- आत्महत्या की किसी भी घटना के संदर्भ में स्वतंत्र, बहुभाषिक, समुदाय-संवेदनशील जाँच तंत्र का विकास हो, जिसमें छात्र, अभिभावक और भाषा विशेषज्ञ सभी सम्मिलित हों।

10.4 वैकल्पिक दृष्टि: एक समावेशी भाषिक लोकतंत्र की ओर

इस शोध लेख के निष्कर्षों के आधार पर हम एक ऐसी शिक्षा प्रणाली की कल्पना करते हैं:

- जहाँ **प्रत्येक भाषा का गरिमापूर्ण स्थान हो**, न कि केवल अंग्रेज़ी को 'योग्यता' का पर्याय माना जाए।
- जहाँ अंग्रेज़ी को **विकल्प** के रूप में सिखाया जाए, **वर्चस्व** के रूप में नहीं थोपा जाए।
- जहाँ **विद्यार्थी की भाषा उसकी बाधा नहीं, उसकी बौद्धिक शक्ति समझी जाए**।
- जहाँ संवाद और आत्म-प्रकाशन को आत्महत्या पर वरीयता मिले।
- जहाँ शिक्षा, भाषा और जीवन— तीनों मिलकर विद्यार्थियों को **सम्मान,** अवसर और भविष्य की आशा प्रदान करें।

यह दृष्टिकोण केवल भाषिक सुधार की बात नहीं करता, यह सामाजिक न्याय और आत्म-गरिमा के लिए शिक्षा के लोकतंत्रीकरण की मांग करता है।

Paulo Freire के शब्दों में:

"To speak a true word is to transform the world."

आज आवश्यकता है कि हमारी शिक्षा व्यवस्था हर बच्चे को उसका 'true word' — उसकी मातृभाषा, उसकी संस्कृति, और उसका अनुभव — देने का साहस और अवसर दे।

भारतीय शिक्षा तभी लोकतांत्रिक हो सकती है, जब वह भारत के बच्चों से उनके शब्द, उनकी ज़ुबान और उनका सम्मान न छीने।

संदर्भ सूची

सन्दर्भ सूची (APA STYLE REFERENCE LIST)

[1] Bourdieu, P. (1991). Language and Symbolic Power. Harvard University Press.

[2] Freire, P. (2000). Pedagogy of the Oppressed (30th Anniversary ed.). Continuum.

[3] Skutnabb-Kangas, T. (2000). Linguistic Genocide in Education – or Worldwide Diversity and Human Rights? Routledge.

[4] Gramsci, A. (1971). Selections from the Prison Notebooks. International Publishers.

[5] Indian Express. (2012). The death of Anil Meena. Retrieved from http://archive.indianexpress.com/news/the-death-of-anil-meena/923471/

[6] Caravan Magazine. (2012). Unhealed Wounds. Retrieved from http://caravanmagazine.in/reportage/unhealed-wounds

[7] The Hindu. (2013). First-year student at Anna University commits suicide. Retrieved from http://www.thehindu.com/news/cities/chennai/first-year-student-at-anna-university-commits-suicide/article3325338.ece

[8] New Indian Express. (2013). Engineering student ends life over poor English skill. Retrieved from http://www.newindianexpress.com/states/tamil_nadu/Engineering-student-ends-life-over-poor-English-skill/2013/11/14/article1889808.ece

[9] The Hindu. (2013). For Dalit students, it's a nightmarish leap from Tamil medium to English. Retrieved from http://www.thehindu.com/news/national/tamil-nadu/for-dalit-students-its-a-nightmarish-leap-from-tamil-medium-to-english/article4686735.ece

[10] The Canara Times. (2013). Suicide of 13 year old boy shrouded in mystery. Retrieved from http://thecanaratimes.com/epaper/index.php/archives/23849

[11] Business Standard. (2013). BPharma student attempts suicide. Retrieved from http://www.business-standard.com/article/pti-stories/bpharma-student-attempts-suicide-113090400470_1.html

[12] Smile Foundation India. (2019). Tribal Education in India. Retrieved from https://www.smilefoundationindia.org

[13] PMC. (2020). Suicide statistics in India. Retrieved from https://www.ncbi.nlm.nih.gov/pmc/articles/PMC5806635/

[14] Wikipedia. (2023). Student suicides in India. Retrieved from https://en.wikipedia.org/wiki/Suicide_in_India

[15] Kumar, A. (2014). English Medium System that is Angreji Raj. Self-published Monograph.